શ્રી વિઠ્ઠલ વાણી

ડો. જયેન્દ્ર સોની

શ્રી વિઠ્ઠલ વાણી

(*"શ્રી વિઠ્ઠલ વાણી"* was one of Dr. Jayendrabhai Soni's message segments which was delivered on mediums like Whatsapp groups and his Facebook account. Here is a collated document of all the messages related to this segment.)

****

"श्री विठ्ठल वाणी" - (१)

****

* मंगलाचरणम्. *

****

श्री सर्वोत्तमजी ना अवगाहन पूर्वे श्रीमदाचार्यचरण महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी ने एवम् प्रभुचरण श्रीगोपीनाथजीने मंगलाचरण द्वारा दंडवत् प्रणाम करीए.

चिंता-संतान-हंतारो यत्पादाम्बुज-रेणवः ।।
स्वीया नां तान् निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।। १ ।।

पुष्टिमार्गीय जीवोनी भगवद् भक्ति अथवा भगवत् प्रपत्ति संबंधी एकमां थी अनेक उद्भवति चिंताओ नो नाश करवानुं सामर्थ्य जेमना चरणकमलना पराग मात्र मां छे, तेवा "श्रीमहाप्रभुजी" ने हुं वारंवार प्रणाम करुं छुं.

आ श्लोक मां पुष्टिजीवने निश्चिंत करवा माटे मंगलाचरण द्वारा श्रीमदाचार्यचरण नी शरणागति स्विकारवानो उपाय श्रीगुसांईजीए समझाव्यो छे.

यदनुग्रहतो जन्तुः सर्व दुःखा - तिगो भवेत् ।।
तमहं सर्वदा वन्दे श्रीमद् वल्लभ - नन्दनम् ।। २ ।।

जन्म लईने सांसारीक दुःखो ना सागरमां डुबी जनारा जीवो जेमना अनुग्रहथी सर्व दुःखोमां थी बची शके छे तेवा महाप्रभु श्रीमद् वल्लभाचार्यजी ना आत्मजने हुं सर्वदा वंदन करुं छुं.

आ श्लोक श्रीगुसांईजी श्रीविट्ठलनाथजीए पोताना जेष्ट भ्राता प्रभुचरण श्री गोपीनाथजी ने वंदन करवा लखेल छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (२)

****

* श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र *

****

"भगवद् प्राप्ति" ए पुष्टिमार्गनुं गंतव्य छे. पुष्टिजीवोने ते मंझीले पहोंचवानो मार्ग बतावनार 'गुरु' महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी छे. पुष्टिमार्ग नुं प्रवर्तन करनार, तेना सिद्धांतो प्रतिपादन करनार तेओ "आद्यगुरु" छे. गुरु 'मार्गदर्शक' होय छे. तेथी मार्ग पर प्रशस्त थवा तेमनी शरणागति स्वीकारवी ए प्राथमिक आवश्यक्ता गणाय. श्रीमहाप्रभुजीना आश्रय विना पुष्टि-पंथे चालवुं असंभव छे. तदर्थ सौ प्रथम श्री वल्लभने जाणवा, ओळखवा जरुरी छे. तेमनी ओळख स्वयम् भगवद् स्वरुप, तेमना आत्मज प्रभुचरण श्रीगुसांईजी सिवाय वधु सारी रीते कोण करावी शके?

तद् विषयक श्रीगुसांईजीए त्रण ग्रंथोनी रचना करी छे, जेनाथी अवगत थवुं ते प्रत्येक पुष्टिजीव माटे आवश्यक छे. ते छे - 'श्री सर्वोत्तम स्तोत्र', 'श्रीवल्लभाष्टक', अने 'स्फुरत्कृष्ण प्रेमामृत'. तेमां तेमणे अनुक्रमे श्रीवल्लभाचार्यजी ना एकसो आठ नाम, तेमना आठ प्रकारना रुप, तथा तेमना छ प्रकारना गुणधर्म अने धर्मी स्वरुपनुं भाववाही, हेतुलक्षी वर्णन करेलुं छे. आ त्रण ग्रंथोना अध्ययनथी श्रीमहाप्रभुजीना स्वरुपने सारी रीते समजी शकाय.

आ बधा स्तोत्रोमां मुख्यत्वे तो प्रतिपाद्य विषय वेदोपनिषद वगेरे शास्त्रोमां जे उपदेश आपवामां आव्या छे, तदनुसार ज छे, जेमा केटलाक अंश नीचे मुजब छे -

१. "जे पुरुष आचार्यवान होय छे, ते ज आने जाणी सके छे". (छां. १.१४.३).

२." ते देव बोल्या - 'अमे देवविद्या अने आत्मविद्या नो उपदेश तो आप्यो, परंतु गति तो आचार्य ज समजावी सकेछे". (छां. ४.१४.१)

३. "आचार्य ना विषे, तेमना देव होवानो भाव राखवो जोईए". (तै. १.११).

४. " जेने देव मां परा भक्ति होय अने जेवी देवमां होय तेवी 'गुरु' मां पण होय त्यारे आ वातोने कोई समजी सके छे. (श्वेता. ४.२३).

५. "आचार्यने साक्षात् ब्रह्म नी मूर्ति समजवा जोईए. (भागवत - ६.७.२९).

६. " आचार्यना चैत्य वपु द्वारा परमात्मा पोतानी गतिनो अभिप्राय जणावे छे. (भागवत (११.३९.६).

श्री गुसांईजी आ त्रणेय स्तोत्रमां आचार्य श्रीमहाप्रभुने "साक्षात श्रीकृष्ण" होवानुं प्रतिपादन करे छे.

......क्रमशः ....

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (३)

****

* श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र *

****

प्रत्येक आराध्य भगवद् स्वरुपमां तेमनी आराधनाना उपदेशक आचार्यनुं गूढरुप निहित होय छे, अने तेवीज रीते आचार्यश्री जे भगवद् स्वरुपनी आराधनानो उपदेश प्रदान करे छे, तदनुरुप आराध्य देवनी तेमना ह्रदयमां स्थिति होय छे. तेथीज प्रभुचरण श्रीविठ्ठलनाथजीए श्रीमदाचार्यचरणने साक्षात 'श्रीकृष्ण' होवानो

निर्देश तेमना त्रणेय स्तोत्र - श्रीवल्लभाष्टक, स्फुरतकृष्णप्रेमामृत, अने श्रीसर्वोत्तमजी मां कर्यो छे .

तदनुसार सर्वोत्तम स्तोत्रमां अनेक नामो ना जोडका (उदा. "आनंद - परमानंद") मां एकबीजा नाम मां अंतर्निहित प्रकटभाव अने गूढभावनी प्रक्रिया रहेली छे.

श्रीगुसांईजी सर्वोत्तम स्तोत्र नां मंगलाचरण मां ज श्रीमहाप्रभुजीना तात्विक दर्शन नो अणसार आपतां कहे छे - " जेनांमां कोईपण प्रकारनो कोई प्रकृत धर्म होतो नथी, परंतु जे स्वयं अप्राकृत धर्मरुप होय, तेवा वेद-वेदांतसूत्र-गीता-भागवत वगेरे शास्त्रोमां प्रतिपाद्य साकार तत्वनी स्तुति करुं छुं.

श्रीमहाप्रभुजीए आज वातनो उल्लेख सुबोधिनीजीमां करतां कह्यु छे -"साकारं ब्रह्म शुद्धं हि माया तत् शक्तिः उत्तमा, तया सर्वत्र सम्मोहः साक्षाद् भक्तिश् च मोचिका". (सु.१.३.४). अहिं मायाना उत्तम शक्ति रुपा होवा छतां पण 'मोहिका' होवाना निर्देश सिवाय बाकी बधी वातो साकार ब्रह्म ने 'शुद्ध' कहीने, ब्रह्मनी स्तूतिरुपा भक्तिनो पण अभिप्राय जणाव्यो छे. ब्रह्मने स्वयं गुणघर्मात्मक कही, श्रीमहाप्रभुजीए शक्तिरुपा मायानो स्वयं गुणधर्ममांअंतर्भाव स्वीकारी लई 'शक्ति' अने 'शक्तिमान' वच्चे तादात्म्य संबंध बताव्यो छे. साकारब्रह्म ने शुद्ध कहेवाथी ब्रह्मना मायिक आकारनुं व्यावर्तन सिद्ध थई जाय छे. तेथी श्रीगुसांईजी ए मंगलाचरणमां तेनो उल्लेख कर्यो नथी. ..... क्रमशः...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्री विठ्ठल वाणी" (४)

****

* श्री सर्वोत्तम स्तोत्र *

****

श्री सर्वोत्तम स्तोत्र पुष्टिमार्गीय अनुयायीओ माटे 'गायत्री' समान छे. वैष्णवोए तेनो नित्य पाठ करवो जोईए. श्रीहरिरायजी तेनो महिमा निचेना पदमां सरल शब्दोमां सरस रीते समजावे छे -

करिये श्री सर्वोत्तम रसपान,
प्रशंसा करी शके कौन कवि ऐसो, श्रीमुख करत बखान ।।१।।
अतिशय करुणा करि या कलिमें, दियो दैवी जीवनको दान;
एक एक अक्षरमें है अधरामृत, गुप्त रहस्य गुणगान ।।२।।
अर्ध निमेष विलंब न करिये, रैन दिवस आठो याम;
रसिक प्रितम जाके रंग रंग्यो, सो है भक्तिनिधान ।।३।।

बाल्यापण थीज श्रीहरिरायजी ने श्रीमहाप्रभुजी ना दर्शन नो अत्यंत विरह रहेतो. एक समय भोजन, जलपान, निंद्रानो त्याग करी तेओए पोताना खंडमां एकांतमां बिराजी, विरह-ताप पूर्वक श्रीसर्वोत्तमजीना ७२ कलाक जप कर्या, फल-स्वरुपे श्रीमहाप्रभुजीए प्रत्यक्ष दर्शन आपेला.

वर्तमानमां एक भगवदिय वैष्णवे एक विद्वान आचार्यश्रीने षोडश ग्रंथो भणाववा विनंति करी. तदनुसार बीजा दिवसे आचार्यश्रीए तेमने सामे बेसाडी मूळ टिका द्वारा संस्कृतमां शिखववानी शरुआत करी. ते वैष्णव नुं संस्कृतनुं ग्यान सीमित हतुं. संकोच वश वचमां तो तेओ न बोल्या, परंतु पाठ पुरो थये, विनंति करी - "जे जे, कांई समजायुं नही". आपश्रीए आग्या करीके "श्रीमहाप्रभुजीनी वाणी तो तेमनी कृपाथी अने पूर्वाचार्यो

नी टिका द्वारा ज समजी सकाय. तेथी तमारे मूळ ग्रंथो ज वांचवा पडशे. ज्यां न समजाय त्यां अटकी जवानुं, श्रीमहाप्रभुजीनुं ध्यान धरी, श्रीसर्वोत्तमजी नो पाठ करवो, पछी आगळ वधवुं. आप स्वयं ज शिखवशे, कारणके आ आपश्रीनुं 'नामात्मक स्वरुप छे, जेमां आप प्ररोक्ष रुपे बिराजे छे".

ते महानुभावे आपश्रीनी आग्या मुजब पोतानो प्रयास चालु राख्यो, जेना परिपाक रुपे संप्रदायने ग्रंथोनुं सरल गुजराती भाषामां विपुल साहित्यनुं दान कर्युं छे. आ दंतकथा नथी, तेमना मुखेथी श्रवण करेली हकिकत छे.

आपणे समजी शकीये के श्रीमदाचार्यचरण आजे पण पोताना ग्रंथो द्वारा 'वांग्मय स्वरुपे' बिराजे छे. आवश्यक्ता छे - आपश्रीना नाम, रुप अने गुणोनुं वारंवार मननपूर्वक अवगाहन करवानी.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (५)

****

* श्री सर्वोत्तम स्तोत्र *

****

श्रीमहाप्रभुजी नी आसूरव्यामोह लीलाना कारणे श्रीचंद्रावलीजी स्वरुप श्रीगुसांईजी ने थयेल आपश्रीना विरहताप ना परिणाम स्वरुप विप्रयोगनी अवस्थामां तेमनां अंतःकरणमां तेमने श्रीमहाप्रभुजी ना अलौकिक साक्षात् स्वरुपनो अनुभव थयो. ते स्वरुपनुं वर्णन तेमणे 'श्रीवल्लभाष्टक' मां कर्यु छे. तेमना दिव्य गुणो तेमणे 'सप्तश्लोकी' मां वर्णव्या छे. तेज प्रमाणे, ते आंतर् अनुभव दरम्यान तेमने श्रीमहाप्रभुजी नी विविध लीलाओ स्फुरी तदनुसार तेमना १०८ नामो तेमणे 'श्री सर्वोत्तम स्तोत्र' मां वर्णव्या छे.

जे प्रकारे वेदव्यासजीनी समाधीमा जे भगवद्-लीलीना दर्शन थया, ते तेमणे "भागवतजी" मां आलेख्या, तेमज श्रीगुसांईजी ने विप्रयोग अवस्थाम्ां श्रीमहाप्रभु जी लीला एवम् गुणोनी जे अनुभूति थई, ते तेमणे श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां १०८ नाम द्वारा आलेखी छे.

श्रीगुसांईजी श्रुतिरुपा श्रीस्वामिनीजी नुं स्वरुप छे. तदर्थ तेमनी वाणी वेदनी श्रुतिओनुं ज स्वरुप छे. माटे श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र साक्षात् वेदनी श्रुति छे.

श्रीभागवतजी ना प्रथम स्कंध ना प्रथम अध्याय ना प्रथम त्रण श्लोको मंगलाचरणना छे. प्रथम श्लोक बीजरुप गायत्रीमंत्र, बीजा श्लोकमां कल्पवृक्ष रुप वेद अने त्रीजा श्लोकमां फलरुप श्रीभागवतजी नुं निरुपण छे. तेवीज रीते श्रीगुसांईजी ना मुखेथी पण त्रण ग्रंथो प्रकट थया छे, १. श्री सर्वोत्तम स्तोत्र, २. श्रीवल्लभाष्टक, अने ३. श्री सप्तश्लोकी', जेमां अनुक्रमे नाम, रुप अने गुण नुं वर्णन तेमणे कर्युं छे. तेने अनुक्रमे, बीज, वृक्ष अने फल पण कहेवाय. आम श्री सर्वोत्तम स्तोत्र मां बीज होवाथी ते ने पुष्टिमार्ग नो "'गायत्री मंत्र" कहेवाय. तेथी श्रीमहाप्रभुजी द्वारा दीक्षित थयेल प्रत्येक वैष्णव माटे गायत्री रुप श्री सर्वोत्तम जीनो नित्य पाठ करवो आवश्यक गणाय.

वेद जेम 'गायत्री बीजनुं वक्ष छे, तेम श्रीवल्लभाष्टक श्री सर्वोत्तम स्तोत्र रुपी बीजनुं वृक्ष छे. वृक्षने जेम प्रत्यक्ष जोई शकाय तेम श्रीवल्लभाष्टक द्वारा श्रीमहप्रभुजीना स्वरुपनो अनुभव करी शकाय.

श्रीभागवतजी वेदनुं फल छे, तेम श्री सप्तश्लोकी' श्रीसर्वोत्तमजी नुं फल छे. तेथी श्री सप्तश्लोकी' द्वारा श्रीवल्लभ रसनुं पान थाय. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (६)

****

* श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र *

****

"सर्वोत्तम स्तोत्र" 'सर्वोत्तम' शा माटे ?

महानुभावोए मुख्यत्वे तेना त्रण कारणो बताव्या छे -

१. आ स्तोत्र 'सर्वोत्तम' आचार्य एवा श्रीमहाप्रभुजीनुं छे. आपश्रीनुं सर्वोत्तमपणु चार प्रकारे सिद्ध छे - (१) लीलामां आप सर्वोत्तम छे कारणके आप श्रीठाकोरजीना हृदयमां बिराजता विप्रयोगात्मक अने भावात्मक श्रीस्वामिनीजी ना स्त्रीगूढ भावनुं स्वरुप छे. (२) आप 'गुरु' तरीके सर्वोत्तम छे, केमके आप सर्वोत्तम 'शुद्धाद्वैत' मतना प्रतिपादक छे. (३) आप सर्वोत्तम माता अने पिता बन्ने छे, कारणके आप करुणापूर्ण माता समान तेमज शिक्षात्मक दंड आपनार पिता समान छे. ते आपनी विशिष्ठता छे. (४) आप प्रभुना पण प्रभु 'महाप्रभु' छे.

२. आ स्तोत्रनी रचना स्वयं भगवदावतार होई सर्वोत्तम एवा श्रीगुसांईजी नी रचना छे. तेओ श्रुतिरुपा गोपीजनोना स्वामिनी श्रीचंद्रावलीजी स्वरुप, अर्थात् वेदनी रुचाओ ना स्वामिनी छे, तेथी पोताना स्वामिनी स्वरुप श्रीमहाप्रभुजी ने प्रसन्न करवा वेदवाणी रुप सर्वोत्तम स्तोत्र नी रचना करी छे.

३. आ स्तोत्र सर्वोत्तम छे केमके ते मंत्र पण छे. तेमां मंत्र तरीके ऋषि, छंद, देवता, बीज अने फल, ए पांचे बाबतो निहित छे. तेथी ते अति उत्तम छे.

सर्वोत्तम स्तोत्र' मां ३५ श्लोक छे, अर्थात् - ७ × ५. ते सूचवे छे - श्रीठाकोरजी नी माफक श्रीमहाप्रभुजी पण षड्गुण युक्त छे अने स्वयं धर्मी स्वरुप एटले अंक-७. तदुपरांत श्रीठाकोरजी अने श्रीमहाप्रभुजीनु चिंतन - नाम, रुप, गुण, लीला अने फल एम पांच प्रकारे थाय छे ते अंक-५. तेम ७ × ५ =३५ श्लोकोनी संगति छे.

आ स्तोत्रमां श्रीमहाप्रभुजीना १०८ नाम आलेखायेल छे. तेमां प्रथम त्रण नाम - आनंद, परमानंद अने श्रीकृष्णास्य बीजरुप छे. बाकीना १०५ एटले ३५ × ३, जेमां सूचव्यु छेके श्रीमहाप्रभुजी आधिदैविक स्वरुपे भक्तोने त्रण प्रकारे अनुभव कराने छे - १. साक्षात् श्रीठाकोरजी तरीके, २. श्रीस्वामिनी स्वरुपे, अने लीलामां साक्षी स्वरुपे अने भूतल पर गुरु स्वरुपे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (७)

****

* श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र *

****

"सर्वोत्तम स्तोत्र" 'सर्वोत्तम' शा माटे ?

महानुभावोए मुख्यत्वे तेना त्रण कारणो बताव्या छे -

१. आ स्तोत्र 'सर्वोत्तम' आचार्य एवा श्रीमहाप्रभुजीनुं छे. आपश्रीनुं सर्वोत्तमपणु चार प्रकारे सिद्ध छे -

(१) लीलामां आप सर्वोत्तम छे कारणके आप श्रीठाकोरजीना ह्रदयमां बिराजता विप्रयोगात्मक अने भावात्मक श्रीस्वामिनीजी ना स्त्रीगूढ भावनुं स्वरुप छे. (२) आप 'गुरु' तरीके सर्वोत्तम छे, केमके आप सर्वोत्तम 'शुद्धाद्वैत' मतना प्रतिपादक छे. (३) आप सर्वोत्तम माता अने पिता बन्ने छे, कारणके आप करुणापूर्ण माता समान तेमज शिक्षात्मक दंड आपनार पिता समान छे. ते आपनी विशिष्ठता छे. (४) आप प्रभुना पण प्रभु 'महाप्रभु' छे.

२. आ स्तोत्रनी रचना स्वयं भगवदावतार होई सर्वोत्तम एवा श्रीगुसांईजी नी रचना छे. तेओ श्रुतिरुपा गोपीजनोना स्वामिनी श्रीचंद्रावलीजी स्वरुप, अर्थात् वेदनी रुचाओ ना स्वामिनी छे, तेथी पोताना स्वामिनी स्वरुप श्रीमहाप्रभुजी ने प्रसन्न करवा वेदवाणी रुप सर्वोत्तम स्तोत्र नी रचना करी छे.

३. आ स्तोत्र सर्वोत्तम छे केमके ते मंत्र पण छे. तेमां मंत्र तरीके ऋषि, छंद, देवता, बीज अने फल, ए पांचे बाबतो निहित छे. तेथी ते अति उत्तम छे.

सर्वोत्तम स्तोत्र' मां ३५ श्लोक छे, अर्थात् - ७ × ५. ते सूचवे छे - श्रीठाकोरजी नी माफक श्रीमहाप्रभुजी पण षड्गुण युक्त छे अने स्वयं धर्मी स्वरुप एटले अंक-७. तदुपरांत श्रीठाकोरजी अने श्रीमहाप्रभुजीनु चिंतन - नाम, रुप, गुण, लीला अने फल एम पांच प्रकारे थाय छे ते अंक-५. तेम ७ × ५ =३५ श्लोकोनी संगति छे.

आ स्तोत्रमां श्रीमहाप्रभुजीना १०८ नाम आलेखायेल छे. तेमां प्रथम त्रण नाम - आनंद, परमानंद अने श्रीकृष्णास्य बीजरुप छे. बाकीना १०५ एटले ३५ × ३, जेमां सूचव्यु छेके श्रीमहाप्रभुजी आधिदैविक स्वरुपे भक्तोने त्रण प्रकारे अनुभव कराने छे - १. साक्षात् श्रीठाकोरजी तरीके, २. श्रीस्वामिनी स्वरुपे, अने लीलामां साक्षी स्वरुपे अने भूतल पर गुरु स्वरुपे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (८)

****

* श्री सर्वोत्तम स्तोत्र *

श्रीसर्वोस्तोत्र ना श्लोको नुं तात्पर्य

****

जे रीते भगवान षडगुण संपन्न छे, अर्थात तेमनामां छ दिव्य धर्मो - ऐश्वर्य, विर्य, यश, श्री, ग्यान अने वैराग्य रहेला छे, तेम श्रीमहाप्रभुजी पण 'भगवद् स्वरुप' होवाथी तेमनांमां पण ते छ धर्मो रहेला छे, जेनुं निरुपण श्रीगुसांईजी ए प्रथम छ श्लोकोमां अनुक्रमे कर्युं छे. प्रत्येक श्लोकमां तेमना एक एक गुण निहित छे. साथे ते प्रत्येक नो विशिष्ट हेतु पण रहेलो छे. आपणे जाणीये छीए तेम प्रत्येक स्तोत्रनी शरुआत मां

मंगलाचरण करवामां आवे छे. तदनुसार आ स्तोत्र ना प्रथम श्लोकथी श्रीगुसांईजीए मंगलाचरण करी तेनी रचना करी छे. श्रीमहाप्रभुजी शुद्ध साकार स्वरुप होई, स्तुति करवा योग्य छे ते कारणे आ प्रथम श्लोकमां आपनो "एश्वर्य" गुण प्रकट थाय छे. ते पछीना बे श्लोको (२,३) मां आ स्तोत्र रचवानुं प्रयोजन बतावvवामां आव्यु छे, ते तेमना "वीर्य" अने "यश" गुणोना द्योतक छे. कलियुगमां कोईपण विद्वान भगवानना स्वरुपने औळखावी सके नहीं, परंतु श्रीमहाप्रभुजी ए भूतल पर प्रकट थई प्रभुनी पहेचान करावी छे. तेथी बीजा श्लेकमां तेमना "वीर्य" गुणनुं निरुपण छे. श्रीठाकोरजीेए स्वयं श्रीमहाप्रभुजीने पोताना मुखार्विंद स्वरुपे पृथ्वि पर प्रकट थवानी आग्या करी ते तेमना "यश" गुण नो सूचक छे. चोथा श्लोकमां तेमणे श्रीमहाप्रभुजीना १०८ नाम प्रकट करवानी प्रतिग्या करी छे. श्री गुसांईजी समजावे छे के श्रीमहाप्रभुजीनी वाणी वेद तुल्य होवाथी दुर्बोध छे. परंतु आस्तोत्रमां निरुपित तेमना १०८ नाम ने जप करवाथी, ते करनारना मनमां ते वाणीनो प्रकाश थवाथी ते सुबध बने छे, तेने समजी सकाय छे. ए रीते श्रीमहाप्रभुजी पोतानी रहस्यमय वाणीना दाता होवाथी आश्लोकमां तेमनो"श्री" गुण प्रकट थाय छे. त्यार पछीना श्लोक-५ मां श्रीगुसांईजीए आ स्तोत्र ना मंत्र नो परिचय कराव्यो छे. स्तोत्र रुपी आ मंत्रना बीज स्वयं श्रीमहाप्रभजी ज छे, तेमज श्रीठाकोरजीना मुखार्विंद रुपे ते मंत्रना देवता पण पोतेज छे. वाणी स्वरुपे स्तोत्रना छंद तेमज रुषी पण तेओज छे. आम अलौकिक "ग्यान" रुपी धर्म आ श्लोक द्वारा निर्दिष्ठ थाय छे. श्लोक-६ मां सर्वोत्तम स्तोत्रना पाठ द्वारा प्राप्त थनार 'अलौकिक फल' नुं निरुपण कर्युं छे. श्रीमहाप्रभुजी उत्तमोत्तम फलना दाता छे. जेमनानां वैराग्य धर्मनी प्रबलता होय तेओ ज एवा दाता होई शके. वैराग्यना गुण विना कोई दाता न बनीशके. तदर्थ आ श्लोक तेमनामां रहेला "वैराग्य" ना धर्मनुं प्रतिपादन करे छे.

आ रीते प्रथम छ श्लोकोमां श्रीमहाप्रभुजीना षड धर्मोनुं प्रतिपादन करी श्रीगुसांईजीए श्लोक ७ थी ३२ सुधीमां तेमना १०८ नामो निरुपित कर्या छे. ३३ मां श्लोकमां आ नामोनो उपसंहार करी छेल्ला बे श्लोको ३४, ३५ मां आ स्तोत्रपाठ करवानी रीत समझाववामां आवी छे......क्रमशः.....

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (९)

****

*. श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र *

****

श्रीमहाप्रभुजीए रचेला ग्रंथोनी वाणी गूढ छे, जे आपश्रीनी कृपाथीज समजी शकाय. तेवीज रीते श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां प्रभुचरण श्रीगुसांईजीए निरुपित करेला आपना नामनुं तात्पर्य पण रचयिता स्वयं श्रीगुसांईजी नी कृपाथी एवम् समर्थ आचार्य तेनो खुलासो करे तोज समजी शकाय कारणके आ स्तोत्र वेदवाणी तुल्य गहन छे. आपणे जोयुं के आ स्तोत्रमां भगवानना दिव्य षडगुणोनी माफक श्रीमदाचार्यचरणना षडगुणोनुं सार गर्भित निरुपण श्रीगुसांईजीए कर्युं छे. तेथी तेने तेना पर महानुभावोए करेली टिकाओना आधारे ज समजी शकाय.

श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र उपर लगभग १३ टिकाओनी रचना थयेल कहेवाय छे. ते पैकि २ मुख्य टिकाओ, १. श्रीगोकुलनाथजी नी तेमज २. श्री चाचा गोपेश्वरजी कृत प्रसिद्ध छे. केटलाक वर्षो पूर्वे तृतीय गृहाधिपति

नि. ली. गो. १०८ श्री व्रजभुषणलालजी महाराजश्री द्वारा सचित्र आपश्रीना १०८ नाममां बिराजता स्वरुपनी लीला ना चित्रो साथे तद् तद् नामना रहस्यनी संगति साथे हिंदी तथा गुजराती एम बन्ने भाषामां प्रकाशित थयेल छे. आपणे अत्रे श्रीगोकुलनाथजी नी टिका ना आधारे संक्षिप्तमां श्री सर्वोत्तमजीमां आलेखायेला श्रीमहाप्रभुजीना नामोनो मर्म समजवानो प्रयास करीशुं.

स्वाभाविक पणे जेवीरीते श्रीगुसांईजीए श्रीसर्वोत्तमजीनी शरुआतमां मंगलाचरण कर्युं छे तेम श्रीगोकुलनाथजीए पण पोताना पिता (श्रीगुसांईजी) ना करणकमलने नमन करी श्रीआचार्यचरणना नामोनी स्वतंत्र टिका लखी छे, कारणके नमन शरणागति नुं सूचक छे, जे स्वीकार्या विना रहस्यने पामी शकाय नहीं. श्रीगुसांईजीना चरणकमलमां अलौकिक सामर्थ्य छे शरणागत भक्तोना मनोरथ पूर्ण करनारा छे. ते माटे श्रीगोकुलनाथजीए "सर्वाभिष्टप्रदायकम्" विशेषण वापर्यु छे जे सूचक छे.

मंगलाचरण द्वारा श्रीगोकुलनाथजी स्वीकारे छे के श्रीगुसांईजीए प्रकट करेला श्रीमहाप्रभुजीना अलौकिक नामोनुं रहस्य ते बेउना चरणारविंद ना द्रढ आश्रयथी ज जाणी शकाय, तदर्थ तेनी वांच्छना राखनार सौ कोईए द्रढाश्रय करवो आवश्यक छे. आपणे पण दैन्यभावथी ते त्रणेय आचार्योना युग्म चरणोमां विनंति करी यथामति सर्वोत्तम स्तोत्र नुं संक्षिप्तमां रसपान करवानो प्रयास करीशुं. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (१०)

****

* श्री सर्वोत्तम स्तोत्र *

****

सामान्यत: आपणे कोई प्रवृत्तिमां प्रवृत्त थईए त्यारे उत्कंठा थाय के तेनी फलश्रुति शुं ? आपणे श्रीसर्वोत्तमजी नी पूर्वभुमिकानुं तो अवलोकन कर्युं, साथे तेनी फलश्रुति पण जाणी लईए जेथी तेमां आपणी निष्ठा दृढ थाय.

श्रीसर्वोत्तमजी ना नाम अनुरुप गुण पण उत्तम ज होय ते स्वाभाविक छे . आ स्तोत्र ना पाठना चार फल महानुभावोए बताव्या छे. आ स्तोत्रमांज तेनो निर्देश मले छे. क्रमशः कह्यु छे -

१. "तदुक्तमपि दुर्बोधं सुबोधं स्याद्यथा तथा". कहे छे - "गूढा गंभीरा गहना श्रीमदाचार्यवाक् सुधा", अर्थात् श्रीमहाप्रभुजीनी वाणी महा कठीन छे, गूढ छे, गहन छे. तेम छतां तेमनी दुर्बोध वाणी पण पुनः पुनः पाठ करवाथी आपश्रीनी कृपाथी ज सुबोध - सरल - समजाय तेवी थई जाय छे. तेना कारणे आपणो श्रीकृष्ण प्रत्ये स्वामित्व भाव अने पोताना मां दासत्वना भावनी स्फुर्ति अचल तथा अटल रुपथी प्राप्त थाय छे. पुष्टिमार्गीय 'धर्म' सिद्ध थाय छे.

२. " विनियोगो भक्तियोग प्रतिबंध विनाशने". श्रीसर्वोत्तमजी नो नित्य पाठ करवाथी विशुद्ध प्रेमलक्षणा भक्ति प्राप्त थाय छे. आ भक्ति द्वारा श्रीकृष्ण नी साथे संबंध करवामां जेटला प्रतिबंध तथा अंतराय - विघ्न उपस्थित थता होय छे, तेने दूर करी भगवल्लीलामां प्रवेश करवाना अधिकारी बनावे छे. आम तेनाथी पुष्टिमार्गीय 'अर्थ' रुप द्वितीय पुरुषार्थनी सिद्धि थाय छे, कारणके पुष्टिमार्ग मां भगवान ज अर्थ छे.

३. "कृष्णाधरामृतास्वाद सिद्धिरत्र न संशयः". त्रीजु फल बताव्यु छे - 'कृष्ण ना अधरामृतना आस्वाद्

नी यथाधिकार प्राप्ति. श्रीकृष्ण नी अधर-सुधा वेणुनाद ना श्रवणथी पण प्राप्त थाय छे, जेना त्रण प्रकार बताव्या छे - देवभेग्या, भगवद्भोग्या अने सर्वभोग्या. अधरसुधानी प्राप्तिथी नित्य कृष्णसंयोग सिद्ध थाय छे, जे पुष्टिमार्गीय 'काम' पुरुषार्थनी सिद्धि छे.

४. " अतः सर्वोत्तमं स्तोत्रं जप्यं कृष्ण रसार्थिभिः". आ स्तोत्रनुं श्रेष्ठ फल रास-रसिक-चतुर भगवान श्रीकृष्ण ना अलौकिक रसनी प्राप्ति छे, जे पुष्टिमार्गीय 'मोक्ष' अंतिम पुरुषार्थ छे. सर्वोत्तम जी नुं आ सर्वोत्तम फल छे.

आ रीते श्रीसर्वोत्तम जीना नित्यपाठ करवाथी तेमनी वाणी समजी शकाय, प्रतिबंधोनी निवृत्ति थाय, श्रीकृष्ण नीअधरसुधानी प्राप्ति थाय अने अलोकिक भगवद् रसनी अनुभूति करवानुं सौभाग्य मले.

अतः श्रीसर्वोत्तमजी ना नित्यपाठ पुष्टिमार्गीय वैष्णवे नियमपूर्वक करवा जोईए.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (११)

****

*. श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र. *

****

श्री गुसांईजीए प्रथम श्लोक मां मंगलाचरण करतां श्रीमदाचार्यचरण नुं ध्यान धर्यु छे. ग्रंथनी शरुआत करतां ईष्टदेव / गुरु आदीनुं स्मरण, तेमने वंदन करवामां आवे छे. तदुपरांत प्रायः प्रथम श्लोकमां ग्रंथना मुख्य विषय नुं बीज रजु करवामां आवे छे. वेदमां श्रीप्रभुना जे स्वरुप अने गुणो बताववामां आव्या छे, तेज स्वरुप अने गुणो श्रीमहाप्रभुजीना छे. तेथी ते बन्नेनी एकरुपता अहीं प्रकट करी छे.

श्रीमहाप्रभुजी भगवान श्रीकृष्ण ना मुखारविंद ना अधिष्ठाता अलौकिक अग्नि स्वरुप छे. अतः आप समस्त प्राकृत धर्मोथी रहित और अप्राकृत संपुर्ण धर्मोना विशिष्ट भगवन् मुखारविंद स्वरुप होवाथी वेद प्रतिपाद्य छे, कारण के स्वयं भगवाने कह्युं छे - "आचार्य मां विजानियात्", अर्थात् 'आचार्य' मनेज जाणो'.

श्रीठाकोरजी अने श्रीमहाप्रभुजीनी एकरुपताने स्पष्ट करतां तो भक्त शिरोमणी सुरदासजीए पण गायुं छे -"सूर कहा कहे द्विविध आंधळो बिना मोलको चेरौ", अर्थात् तेमणे ते बन्नेमां भेद विचार्योज नथी के श्रीमहाप्रभुजी ना पद अलग थी गावा पडे! आम श्रीकृष्ण अने श्रीआचार्यजी मा अभेद सूचव्यो छे. आवा अनेक प्रमाण प्राप्त थाय छे.

श्रीगुसांईजी "पाकृत धर्मोनाश्रयम्" थी समजावे छे के श्रीमदाचार्यचरण मां प्रकृति ना गुणो - सत्व, रज, तम अथवा एवा अनेक धर्मो - काम, क्रोध, मोह, मद मत्सर आदि मनोधर्मो, के बाल्य, कुमार, युवा, प्रौढ व वृद्धत्व रुपी देह धर्मोना लेश मात्र नथी. एटलुंज नहीं परंतु तेंमनामां प्रकृति थी संबंध रहित दिव्य, अलौकिक आनंद रुप समस्त देह, इन्द्रियो, मन अने तेना धर्मो रहेला छे. आम श्रीमहाप्रभुजी नुं स्वरुप संपुर्ण रुपथी 'अप्रकृत' छे, जेवी रीते भगवान नुं स्वरुप "आनंद मात्र करपाद मुखोदरादि" कह्यु छे. आपश्रीना आवा अलौकिक - अप्राकृत देहनो अनुभव अनेक सेवकोने / भक्तोने थयेल होवाना प्रमाण तेमना असंख्य पदोमां प्राप्त थाय छे.

श्रीकृष्ण अने श्रीमहाप्रभुजीमां तत्वतः अभेदपणाने श्रीगुसांईजीए "यत्तच्छुद्ध" पद द्वारा सूचित कर्यो छे. वळी श्रीकृष्ण ब्रह्म नुं साकार स्वरुप छे, अने तद्रुप श्रीआचार्यजी नी तेओ दैन्यभावे स्तुति करे छे तेम अंतमा स्पष्ट कर्युं छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"विठ्ठल वाणी" (१२)

****

*. श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र *

****

प्रथम श्लोक मां श्रीमहाप्रभुजी नी स्तुति करी श्रीगुसांईजी बीजा श्लोक मां कलियुगना विषमताथी उत्पन्न थयेल स्थिति अने तेना प्रभाव नुं निरुपण करे छे. कलिकालमां तमोगुणनुं प्राधान्य होय छे. तेना लीधे मनुष्योमां अग्यान के अन्यथा ग्यान ने कारणे सत्यासत्यनो विवेक रहेतो नथी, तथा तेमनी बुद्धि मलिन थई जाय छे.

आवी विपरित असर सामान्य मानवी पर ज नहीं परंतु विद्वानोनी मति पर पडे छे, तेथी तेमना पर पण अग्यान रुपी अंधकार छवाई जाय छे. अहंकार थी तेमनी बुद्धि विमूढ थई जवाथी तेओ पण श्रीमहाप्रभुजीना वास्तविक स्वरुपने जाणी शकता नथी. तेओ वेदना यथार्थ अर्थने समजवा माटे असमर्थ बनी जाय छे. ईश्वर नुं अने वेदनुं साचुं ग्यान मेळववा माटे मनुष्य मां सत्वगुण नी अधिकता आवश्यक होय छे तेना अभावना कारणे विद्वानोनी दृष्टि पर अग्यान रुपी अंधकार नो पडदो छवाई जाय छे, अर्थात् तेओ तिमिरांध बनी जाय छे.

ज्यां सुधी जीव मां रजोगुण अने तमोगुणधारे होय त्यां सुधी भगवद् स्वरुप नुं ग्यान छतुं नथी. तेने माटे निर्गुण थवुं जरुरी छे. सगुण लोको मां भगवद् स्वरुप मां संशय थया करे छे.

आ वात सामान्य मनुष्य के विद्वान पूरतु सीमित नथी, परंतु देवो पण भगवान ना स्वरुप ने ओळखि सकता नथी. आ बाबत ना अनेक उदाहरण पुराणोमें मळे छे. ब्रह्माजीए श्रीकृष्णने औळखी न शकवाना कारणे वाछडा चोरी लिधा हता, ईंद्रे पण गोवर्धन लीला समये वृष्टि करी हती. रामावतारमां पण आवी घटनाओ जोवा मळे छे.

मनुष्य हकिकतमां पोताने ओळखी शकतो नथी तो भगवान ने क्यांथी जाणी शके? आ युगनो कुप्रभाव छे तेथी कोई ने दोष देवा थी फायदो नथी. ज्यां सुधी प्राकृत पदार्थोमां वैराग्य न आवे त्यां सुधी प्रभु भक्ति सुदृढ थई शकती नथी ,

तदर्थ श्रीगुसांईजी श्रीमहाप्रभुजी नुं अलौकिक माहात्म्य समजाववा अहीं तत्पर थया छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (१३)

****

* श्री सर्वोत्तम स्तोत्र *

****

त्रीजा श्लोकमां श्री गुसांईजी श्रीमहाप्रभुजी ना प्राकट्य नो हेतु बतावे छे. आप कहे छे "निज भक्तो पर दया करीने श्रीहरिए वाणी वडे पोतानुं माहात्म्य प्रकट करवा माटे पोताना मुख स्वरुप श्रीमहाप्रभुजीने प्रकट कर्या छे."

अहीं श्रीगुसांईजीए 'दया' शब्द वापर्यो छे, जे सार गर्भित छे. लोकमां अनाथ, बिचारा लोको माटे दया आवे. परंतु जे पोताना स्वजन होय तेमना पर तो प्रेमवश कृपा करवानी वृत्ति होय छे. जीव हजारो वर्षोथी प्रभु थी विखुटो पड्या पछी तेने ते बदल ताप-क्लेश थयो नथी अने भवसागरमां भटक्या करे छे. ते भगवान साथेना संबंध ने विसरी गयो छे. त्यारे जो भगवान तेना पर 'दया' करे तो पण ते प्रभुनी कृपालुताना स्वभाव नुंज परिणाम छे.

भगवान नुं माहात्म्य एटले तेमनो महिमा, जे तेमना नाम, रुप, गुण अने लीला द्वारा प्रकट थाय. भगवाने वेद द्वारा पोतानुं माहात्म्य प्रकट कर्युं हतुं. वेद साक्षात् भगवान नी ज वाणी छे. परंतु जुदा जुदा विद्वानोए तेना भिन्न भिन्न अर्थ प्रकट कर्या छे. तेमां संपुर्ण सत्य न हतुं. वेदनुं फल भागवत छे. तेनुं पण यथार्थ रहस्य अन्य कोई प्रकट करी शक्यु नहीं. प्रमाण रुप अन्य शास्त्रो गीता अने ब्रह्मसूत्रो सहित चारेय शास्त्रो नी एकवाक्यता समजाववा भगवाने पोताना मुखार्विंद स्वरुपने श्रीमहाप्रभुजी रुपे प्रकट कर्या, कारण के वाणी प्रकट करवा मुख नी आवश्यक्ता रहे.

वेदमां अग्निने भगवान नुं मुखार्विंद कह्यु छे। अग्नि एटले 'वैश्वानर'. माटेज श्रीमहाप्रभुजी ने "वैश्वानर" कह्या छे. आम श्रीमहाप्रभुजी नुं प्राकट्य अन्य अवतारोनी माफक भक्तो नी प्रार्थना थी थयुं नथी, परंतु, दैवीजीवोना दुःख ने हरवा श्रीहरि ए पोतानी ईच्छा थी प्रभु थी विखुटा पडेला जीवात्माओने पुनः पोतानी प्राप्ति करावबा तेमना पर दया विचारी, तेओ पोतेज श्रीमहाप्रभुजी स्वरुपे प्रादुर्भाव थया छे.

अहीं "स्वास्यं" शब्द नो प्रयोग कर्यो छे, तेनुं तात्पर्य ए छे के भगवान पोताना कोई धर्म ने लईने के अन्य धर्मोनो त्याग करीने अंशावतार के कलावतार नहीं परंतु लोकवेदातित पुष्टि पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण ना मुखार्विंद नो आधिदैविक अग्नि स्वरुपे श्री वल्लभ नुं प्राकट्य छे तेम श्रीगुसांईजी समजावे छे.

श्रीमहाप्रभुजी पोताना ग्रंथो मां बिराजी तेनुं सेवन करनार पुष्टिजीवोने वाणी द्वारा फलदान करे छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (१४)

****

*. श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र *

****

आ स्तोत्र ना चोथा श्लोकमां प्रभुचरण श्रीगुसांईजी सर्वोत्तम स्तोत्र नुं तात्पर्य, हेतु समजावे छे. भगवद् वाणी दुर्बोध छे, सौ कोई ने न समजाय तेवी छे. वेदादि भगवद् शास्त्रोने आधारे श्रीमहाप्रभुजीए निबंध,

अणुभाष्य आदि ग्रंथो रची ब्रह्म, जीव,जगत आदि तत्त्व समजावी मनुष्य ना कर्तव्य नो बोध आप्यो छे. परंतु आ प्रकीर्ण ग्रंथो पण भगवद् वाणी जेवाज दुर्बोध छे, सहज रीते समजाय तेवा नथी.

श्रीगुसांईजी समजावे छे के श्रीमहाप्रभुजी नी दुर्बोध वाणी मात्र तेमनी कृपाथी ज समजी शकाय. तदर्थ आपश्री कहे छे के आ स्तोत्र मां तेओ श्रीमदाचार्यचरण ना १०८ नाम प्रकट करे छे. जेवीरीते लौकिक अग्नि प्रकाश आपे छे, तेम वैश्वानर स्वरुप श्रीवल्लभाचार्यजी नो अलौकिक दिव्य अग्नि आपणा ह्रदयने प्रकाशित करे छे.

आ स्तोत्र मां श्रीमहाप्रभुजी ना १०८ नामो आलेखवामां आव्या छे. आ बधा अलौकिक अग्नि स्वरुप ना नामो होवाथी ते स्वरुपात्मक छे. तेथी आ नामोनो जप करवाथी ते नामो मां बिराजता अलौकिक अग्नि स्वरुप श्रीमहाप्रभुजी स्वयं कृपा करीने आपणा ह्रदयमां तेमना ग्रंथो नो प्रकाश करे छे. अर्थात् आ स्तोत्र नो पाठ करवाथी आपश्री तेमना ग्रंथो ना खुलासा स्वयं करे छे, जाणे तेओ प्रत्यक्ष मां समजावतां होय तेवो अनुभव थाय छे. तेमना आ १०८ नामो मां एवं अद्भूत सामर्थ्य रहेलुं छे.

श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां कहेवामां आवेल नामोनी संख्या १०८ छे. तेना जुद जुदा भावे बतावावामां आव्या छे. 'नव' (९) पुर्णांक छे. '१२' अंक अनेक रीते महत्त्वपूर्ण छे, आदित्य अर्थात् सूर्यबिंब १२ छे. तेवाज प्रकाशवान श्रीमहाप्रभुजी छे. भगवान नी १२ दिव्य शक्तिओ छे. भगवदावतार आपश्री नुं सामर्थ्य पण तद्वत छे. श्रीठाकुरजीना द्वादश अंग शास्त्रो मां वर्णित छे. आम विविध प्रकारे जोतां पुर्णांक नव वडे गुणाकार करतां 'पुर्णानंद' परिपूर्ण श्रीमदाचार्यचरण ना स्वरुपने समजाववामां आव्युं छे.

एम पण बताववामां आवे छे के भगवान ना षड् धर्मो - ऐश्वर्य, वीर्य, यशः, श्री, ग्यान, वैराग्य, तेमज धर्मी स्वरुप मळी 'सात' थाय. पुरुषार्थ पण धर्म,अर्थ,काम, मोक्ष, अने भक्ति मळी 'पांच' छे. तेथी ७ ×५ = ३५ थाय. प्रथम त्रण नाम - 'आनंद', 'परमानंद' अने 'श्रीकृष्णास्य', बीज मंत्र रुप छे. ते त्रण नाम श्रीठाकुरजी, श्रीस्वामिनीजी तेमज, तद् मुखारविंद स्वरुप छे. त्रणेय रुप नी त्रिविध लीलाओ छे. एक एक रुप नी ३५ लीलाओ, तेथी ३५ × ३ = १०५, अने बीज मंत्र रुप त्रण नाम मली १०८ थाय.

श्रीगुसांईजी कहे छे के आ १०८ नामो नो जप करवाथी बधा पापोनो नाश थाय छे. तदर्थ प्रत्येक पुष्टिजीवे, श्री सर्वोत्तम स्तोत्र नो पाठ 'गायत्री' समजी अवश्य करवो जोईए.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"विठ्ठल वाणी" (१५)

****

* श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र *

****

आ स्तोत्र ना पांच मां श्लोक मां श्रीगुसांईजी तेना रुषि, छंद, देवता तेमज बीज नो निर्देश करे छे कारणके अहीं निरुपित श्रीमहाप्रभुजी ना नामो फलात्मक मंत्र रुपे छे. श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र ना रुषि स्वयं श्रीगुसांईजी छे, जगतमां भगवानना ऩामो जे छंदमां कहेवाता छे ते 'अनुष्टुप ' छंद मां आ स्तोत्र रचायेलो छे. तेना देवता महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी ज छे अने पोताना भक्तो पर करुणा करनार प्रभु तेना 'बीज' रुप

छे.

अलौकिक अग्नि स्वरुप श्रीमहाप्रभुजी ना पुत्र रुपे श्रीगुसांईजी अलौकिक रुषि छे. तेओ राजर्षि, महर्षि एवम् देवर्षि पर छे ते सुचववा 'तु' प्रत्यय लगाड्यो छे. श्रीगुसांईजीने अग्निकुमार कहेवानुं तात्पर्य समजावतां कहे छे के जेम लाकडानी भीतर अग्नि छुपायेल होय छे, परंतु ते देखातो नथी, तेम संयोग रसात्मक श्रीगुसांईजी नी भीतर विप्रयोग रस छुपायेल छे, जे तेमना चरित्र मां क्वचित देखाय छे. तेओ भगवद् स्वरुप होई आ स्तोत्र साक्षात् भगवाननी रचना छे, तेम कही शकाय.

दरेक मंत्र ना रुषि होय तेम 'छंद' पण होय. काव्यमां प्रयोजाता शब्दो नी विशिष्ट रचनाने छंद कहेवाय छे. वैदिक साहित्यमां प्रसिद्ध मुख्य 'अनुष्टुप' छंद छे. ते प्राचीन होवाथी जगतमां सौथी प्रसिद्ध छे. आ छंद सिद्धांत ना निरुपण माटे सरल छे. तेथी आ स्तोत्र नी रचना अनुष्टुप छंदमां छे.

प्रत्येक मंत्र ना देवता होय छे. जे दिव्य रसात्मक लीलाओ थी देदीप्यमान होय ते 'देवता' कहेवाय. भागवतजीमां 'कृष्ण' ने साक्षात् भगवान कह्या छे. श्रीमहाप्रभुजी भगवान कृष्ण ना मुखाविंद स्वरुप छे. तेथी तेमने 'श्रीकृष्णास्य' कह्या छे. तेओ भक्तोने स्वरुपानंद नुं दान करनारा छे. भगवद् स्वरुप श्रीमहाप्रभुजी आ स्तोत्र ना देवता छे.

तेवीज रीते प्रत्येक मंत्र मां बीजमंत् होय छे. अहीं श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र रुपी मंत्रनो बीज मंत्र स्वयं श्रीठाकोरजी छे. श्रीठाकोरजी नी कृपा शक्ति नुं प्रकट. स्वरुप श्रीमहाप्रभुजी छे तेम सुचववा अहीं श्रीठाकोरजी माटे "कारुणिक" शब्द प्रयोग करवामां आव्यो छे. आ रीते आ श्लोक नी व्याख्या करवामां आवी छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"विठ्ठल वाणी" (१६)

****

* श्री सर्वोत्तम स्तोत्र. *

****

श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र ना छठ्ठा श्लोकमां श्री गुसांईजी आ स्तोत्र नुं प्रयोजन समझाव्यु छे. कोईपण वस्तु नुं निरुपण कोई विशेष प्रयोजन थी करवामां आवे छे. धर्मार्थकाममोक्ष पुरुषार्थोना प्रयोजन माटे तो अनेक साधन ग्रंथो उपलब्ध छे, तेवा साधारण हेतु माटे नहीं, परंतु भक्ति मां विघ्नो दूर करवा, अर्थात् सेवा अने स्मरण मां निरंतर मन जो उद्विग्न रहेतुं होय तो तेवा प्रतिबंधो दूर करी कृष्णना अधरामृत ना आस्वाद नी सिद्धि माटे श्रीगुसांईजीए आ स्तोत्र नी रचना करी छे. आम आ स्तोत्र ना पाठ करवानुं फल आ श्लोक मां निरुपित करवामां आव्यु छे.

'भक्तियोग' मां आवता प्रतिबंधो ना नाशनी वात अहीं कहेवामां आवी छे, मात्र 'भक्ति' नथी कह्यु तेनुं तात्पर्य बताव्यु छे के भक्तिना बे प्रकार छे - 'मर्यादाभक्ति', जेमां सकाम भाव होय छे, अने 'पुष्टिभक्ति', जे निर्गुण भक्ति छे. अहीं 'भक्तियोग' द्वारा पुष्टिभक्ति नो निर्देश करवामां आव्यो छे. श्रीमहाप्रभुजी नी कृपाथी ज अनन्य भक्तियोग सिद्ध थई शके छे. आ स्तोत्र ना पाठ नुं आ एक फल छे.

दुःसंग ना प्रभाव थी जीवने आसुरी वृत्ति आवे छे, जेना कारणे ते बहिर्मुख थाय छे. भोग, उद्वेग अने

प्रतिबंध ए त्रण आसुरी भाव छे, जेने लीधे जीव बहिर्मुख बने छे. ते पुष्टिजीने सेवामां प्रतिबंध करे छे. जीव पोताना सामर्थ्यथी ते नडतरने दूर करी शकतो नथी. अलौकिक अग्नि स्वरुप श्रीमहाप्रभुजी प्रतिबंध करनारा दोषोने बाळवा सक्षम छे. तेथी आ श्री सर्वोत्तम स्तोत्र मां रहेलुं तेमनुं नामात्मक स्वरुप ते प्रतिबंधोने दूर करे छे. स्तोत्रना पाठ नुं आम बीजु फल बताव्यु छे.

श्रीसर्वोत्तमजीनुं त्रीजु फल छे -'कृष्ण ना अधरामृत ना आस्वाद नी प्राप्ति' सर्व ईन्द्रियो द्वारा श्रीठाकुरजी ना अधरामृत एटले स्वरुपानंद नो अनुभव करवो. पुष्टिमार्ग नुं ते परम फल छे, जेमां संयोगात्मक अने विप्रयोगात्मक बन्ने प्रकारे अनुभव थाय छे .

श्रीगुसांईजी कहे छे के श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र ना पाठ द्वारा आ आ त्रणेय फलनी निश्चितपणे प्राप्ति थाय छे, तेमां कोई शंका ने स्थान नथी. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"विठ्ठल वाणी" (१७)

****

* श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र - नाम १ *

****

श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र ना अगाउना छ श्लोकोमां श्रीगुसांईजीए मंगलाचरण थी लई तेनी जुदी जुदी भूमिका समजावी. हवे सातमा श्लोक थी साडा बत्रीस श्लोकोमां मां तेओ श्रीमहाप्रभुजी ना १०८ ऩामोनुं निरुपण करे छे.

सातमा श्लोक मां छ नामो कहेवामां आव्या छे. तेमांना प्रथम त्रण नाम 'बीज मंत्' रुप छे. ते छे - 'आनंद', 'परमानंद' अने 'श्रीकृष्णास्य'. आ प्रत्येक बीजरुप नामना पांत्रीस पांत्रीस नामो बताव्या छे, तेम पूरक नामो १०५ छे, जे मळी कुल १०८ नाम थाय छे. आ त्रण नामो नुं तात्पर्य समजावतां कह्यु छे - 'आनंद' एटले श्रीठाकोरजी नुं स्वरुप, 'परमानंद' एटले श्रीस्वामिनीजी नुं स्वरुप, अने 'श्रीकृष्णास्य' बन्ने नुं साक्षी रुप श्रीवल्लभ नुं स्वरुप.

१. "आनंद" - श्रीगुसांईजी प्रथम नाम 'आनंद' प्रकट करे छे, कारण के आ नाम प्रकट करतां तेमना ह्रदयमां आनंद नी स्फुर्ति थई छे. वेदमां ब्रह्म ने माटे 'आनंद' शब्द वपरायो छे. तेने माटे ज "रसो वै सः कहेवायु छे. आनंद ना त्रण प्रकार प्रसिद्ध छे -
१) 'विषयानंद', जेनी जगत मां मुख्यता छे. ते ईन्द्रियो ना विषयो थी प्राप्त थतो आनंद छे, जे मृगजळ समान होय छे. ते प्राकृत आनंद छे, जे क्षणिक होय छे. (२) 'ब्रह्मानंद', जेनो अनुभव समाधिस्थ रुषि-मुनीओ करे छे. ग्यानमार्गीय मोक्ष थी अक्षरब्रह्म नी प्राप्ति थाय त्यारे थती आनंद नी अनुभूतिने 'ब्रह्मानंद' कहे छे. (३) 'भजनानंद', जे भगवान नो स्वरुपानंद छे. भगवान 'आनंदमात्र करपाद मुखोदरादि' छे.

संयोग अवस्था मां प्रभु सर्व लीला सामग्री सहित प्रकट थाय छे, त्यारे भगवान स्वयम् बाह्याभ्यंतर आनंदमय थाय छे, जे आन्द-स्वरुप ब्रह्मने "कृष्ण" कहे छे. तेनो अर्थ 'सदानंद' थाय छे. श्रीगुसांईजी वल्लभाष्टक मां श्रीमहाप्रभुजी ने "वस्तुतः कृष्ण एव" बतावे छे.

श्रीमहाप्रभुजीए हनुमान घाट उपर श्रीगुसांईजी ने पोताना 'आनंद' स्वरुपना दर्शन आप्या हतां,

जेमनुं चिंतन करी तेमणे श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र नी रचना करी छे.

तेमनुं आ नाम 'आधिभैतिक धर्मी' स्वरुप छे. ...... क्रमशः...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"विठ्ठल वाणी" (१८)

****

* सर्वोत्तम स्तोत्र (नाम २). *

****

श्रीमहाप्रभुजी नुं बीजुं नाम श्रीगुसांईजीए "परमानंद" बताव्यु छे. श्रीठाकोरजी नुं एक स्वरुप 'आनंद रुप' छे, ज्यारे बीजु 'आनंदमय रुप छे. ते तेमनुं सकल लीला सृष्टि सहित नुं स्वरुप, जे 'परमानंद' स्वरुप छे. आनंद एटले 'कृष्ण', अने परमानंद एटले 'श्रीकृष्ण', अर्थात् स्वामिनीजी सहित, लीला सृष्टि सहित कृष्ण.

श्रीमहाप्रभुजी सर्व रसमय रासलीलाना आनंदमां निमग्न रहे छे. तेथी तेओ परमानंद रुप छे. "रसानां समुहः रास", अर्थात् रसोना समुहने रास कहे छे. तेथी 'रासलीला सर्व श्रेष्ठ छे. रसशास्त्रमां श्रृंगार रसमां सर्व रस संमिलित होय छे, जेना बे दल - संयोगात्मक अने विप्रयोगात्मक होय छे. तेनी आनंद अने परमानंद रुप संग्या आपवामां आवी छे.

अगाउ कहेलु 'आनंद' नाम संपुर्ण ऐश्वर्य नी महानता वाळा अशेष महात्म्यद्योतक भगवद् धर्मनुं निरुपण करे छे, जे वियोगात्मक छे. ज्यारे 'परमानंद' नाम शेषमाहात्म्य वाळु व्रजभक्तो ना दासत्वरुपनुं वर्णन करे छे. आवा प्रकार नुं प्रकार नुं भजनानंदरुप परमानंद नुं स्वरुप व्रज स्त्रीओना उच्चतम दास्य प्रकार वाळु छे. व्रजस्त्रीओमां पण श्रीस्वामिनीजी सर्वोपरि छे.

प्रभु नी अभिरुचि श्रीस्वामिनीजी सिवाय बीजे क्यांय नथी. तेमनुं आधिदैविक दासत्व देह, इन्द्रिय वगेरे नुं साक्षात् समर्पण रुप छे. एमां तदीयत्व-सर्वात्मभावनी पूर्ण स्थिति छे. श्रीमहाप्रभुजी नुं स्वरुप ते प्रमाणे नुं छे.

भागवत दशम स्कंध नी सुबोधिनीजी नी कारिका मां "नमामि हृदये शेषे....." मां वर्णव्या प्रमाणे 'हृदयरुपी शेष पर स्थिति करवावाळा, लीला रुपी क्षीरसागर मां सहस्त्र लक्ष्मीओथी सेवाता कलानिधिने नमन करवानुं कहे छे.

आवा प्रकार नुं लीला विशिष्ट "परमानंद" स्वरुप श्रीमहाप्रभुजी मां स्थित छे. आ नाम "आध्यात्मिक धर्मी स्वरुप" छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"विठ्ठल वाणी" (१९)

****

* श्री सर्वोत्तम स्तोत्र - नाम ३ *

****

श्रीगुसांईजी आचार्यचरण नुं त्रीजु नाम "श्रीकृष्णास्यं" बतावे छे. श्रीकृष्ण अर्थात् 'श्री' एटले स्वामिनीजी, सहित 'कृष्ण'. 'आस्य' नो अर्थ छे 'मुखार्विंद'. आ शब्दथी संयोग - विप्रयोग द्विदलात्मक श्रृंगार स्वरुपना मुखार्विंद स्वरुप श्रीमहाप्रभुजी छे तेम सूचित करे छे.

वधु खुलासो करतां समजावे छे के अशेष ऐश्वर्य भगवद् भाव (श्रीठाकोरजी) पुंभाव रुप संयोग तथा शेष महात्म्य श्री स्वामिनीजी भाव रुप विप्रयोग, ए बन्ने - संयोग विप्रयोग भावनुं एकिकरण श्रीमहाप्रभुजी छे, जेनुं वर्णन "सौंदर्य पद" श्लोकमां समजाव्यु छे. तदनुसार श्रीमहाप्रभुजी श्रीस्वामिनीजी तथा श्रीठाकोरजी बन्ने ना मुखार्विंद स्वरुप छे. तेथी तेओ उभय रसात्मक छे.

एक समये वेदनी श्रुतिओने आर्ति धई के मन वाणीथी अगोचर रसात्मक साकार आनंदघन स्वरुपनुं अने नित्य वर्णन करीए छीए, तेमनुं अमे भक्ति थी दर्शन करीए, त्यारे व्यापीवैकुंठ निवासी भगवान श्रीकृष्णे तेमने सकल लीला सामग्री सहित पोताना लावण्य मय वेणुनाद करतां स्वरुपना दर्शन कराव्या त्यारे श्रुतिओए भगवानने रमण करवानी प्रार्थना करेली. त्यारे भगवाने तेमने आपेला वरदान अनुसार श्रुतिओ सारस्वतकल्पमां गोपीजन रुपे प्रकट थई अने भगवाने नंदालय' मां प्रकट थई ते गोपांगनाओना विविध मनोरथो नी तेमनी भावनानुसार अनेक प्रकारनी लीलाओ थी श्रृंगार कल्पद्रुम महारास द्वारा पूर्ति करी हती. तेनुं सविस्तार वर्णन "भावैंकुरित महीमगद्दशा.......... श्रृंगार कल्पद्रुमम्" श्लोकमां करवामां आवेलुं छे. तेमां फलित श्रृंगार रस स्वरुप कल्पद्रुम ना भजन सेवन नी श्रीगुसांईजी आग्या करे छे.

श्रीकृष्णस्य स्वरुपे श्रीमदाचार्यचरण स्त्री रुपे, पुं रुपे तेमज उभयात्मक रुपथी साक्षी रुपे एम त्रितयात्मक रुपे बिराजे छे. ते त्रणेय स्वरुपो नित्यलीलामां भोक्ता, भोज्य अने अनुभव कर्ता रुप होवाथी आ सर्वोत्तम स्तोत्र मां बीज मुख्य रुपमां भोक्ता (आनंद), भोज्य (परमानंद) अने अनुभव कर्ता (श्रीकृष्णास्य) नुं वर्णन आ सातमां श्लोक मां करवामां आव्यु छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"विठ्ठल वाणी" (२०)

****

* सर्वोत्तम स्तोत्र * नाम_४

****

श्रीगुसांईजीए चोथु नाम आप्युं छे - "कृपानिधि". 'निधि' नो अर्थ थाय 'भंडार'. श्रीमहाप्रभुजी कृपा ना भंडार समा छे. भगवान नी अनंत शक्तिओ छे. भागवतमां वर्णवेली भगवाननी बार शक्तिओ मां एक छे "पुष्टि". पुष्टि एटले 'कृपा', अनुग्रह. श्रीस्वामिनीजी भगवान नी आल्हादिनी, ईच्छा शक्ति छे. श्री यमुनाजी तेमनी 'कृपा शक्ति' छे. प्रभु नित्य लीलामां थी छुटा पडी भूतल पर जन्मेला दैवी जीवोना उद्धारार्थे श्रीमहाप्रभुजी स्वरुपे प्रकट थया छे, अने पोतानी कृपा द्रष्टि थी तेओने भगवत्-प्राप्ति करावे छे.

आ निरानंद जगतमां कोईपण जितनी अपेक्षा विना केवळ निजजनो पर कृपा करवा माटे ज नित्य लीला नो आनंद छोडी भूतल पर पधारवुं ते आपना "कृपानिधिपणा"नुं सूचक छे.

श्रीमहाप्रभुजी श्रीठाकोरजी, श्रीस्वामिनीजी अने साक्षीरुप त्रिदलात्मक धर्मी स्वरुपे भूतल पर मनुष्याकृतिरुप धारण करी "कृमानिधि" स्वरुपे एटला माटे पधार्या छे के तेमना सुंदर स्वरुप ना दर्शन करी देवीजीवो तेमने

शरणे आवे तो पोते करुणामय होवाथी सदोष जीवोना सर्व दोषो दूर थई जाय छे.

श्रीमहाप्रभुजी पुष्टिमार्ग मां गुरु छे. शास्त्रमां विधान छे के जेओ गुरु सन्मुख शरणे आवे छे, तेना बधा दोषो बहार प्रकट थाय छे. समर्थ गुरु शरणागत ना दोषोने भस्मिभूत करे छे, अने गुरुना प्रताप थी ते जीवमां पूनः प्रवेश करता नथी. श्रीमहाप्रभुजी भगवन्मुखार्विंद अग्निनी अधिष्ठाता होवाथी तेमनामां एवुं सामर्थ्य विद्यमान छे.

आम तेओ समनुष्याकृति, कृपानिधि अने अग्नि स्वरुप होवाथी तेमनुं "कृपानिधि" नाम 'धर्मी स्वरुप' छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"विठ्ठल वाणी" (२१)

****

श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र नाम- ५

****

श्रीगुसांईजी पांचमुं नाम 'दैवोद्धार प्रयत्नात्मा' बतावे छे . गीताजीमां भगवाने बे प्रकारनी सृष्टि नुं वर्णन कर्युं छे . श्रीमहाप्रभुजी ए दैवी सृष्टि ना बे प्रभेद 'पुष्टि' अने 'मर्यादा' नुं निरुपण कर्युं छे .त्रिदलात्मक आचार्य स्वरुपे आपश्रीए भूतल पर प्रगट धयी समग्र दैवी जीवो -पुष्टि तथा मर्यादा -ना उद्धार माटे अथाग प्रयत्न कर्या छे.

जुदा जुदा स्थळे रहेला दैवी जीवोना उद्धार माटे मात्र अगीयार वर्षनी बालवयथीज आरंभी समग्र भारतनो त्रण त्रण वखत परिभ्रमण करी देश-काल-मंत्र विगेरे ना ग्यान साथे जीवोना प्रकृति जन्य सत्व-रज-तम गुणोनो निहाळ्या छे, अने ते जीवोने ओळखी पोताने शरणे लीधा छे.

विविध भगवद् शास्त्रो ना प्रमाणोना आधारे श्रीमहाप्रभुजीए तेना निचोड रुपे अनेक ग्रंथो नी रचना करी स्व-सिद्धांत नुं प्रतिपादन कर्युं छे. तेना द्वारा तेमणे तत्कालिन प्रवर्तित मायावादनुं निराकरण , अन्यवादोनो निरास, करी स्वमत-ब्रह्मवादनी स्थापना करी छे. तेमणे निर्गुण भक्तियुक्त 'पृथक् शरण मार्ग' स्थापित कर्यो छे.

तेमणे 'मर्यादा भक्तिमार्ग' थी विशिष्ट 'पुष्टि भक्तिमार्ग', जे सामान्यतः 'पुष्टिमार्ग' तरीके ओळखाय छे, तेनी सुस्थिरता अने भगवद्-प्राप्ति' माटे सेवनीय स्वरुपोने प्रकट करी सुंदर 'सेवामार्ग' नुं प्रवर्तन कर्यु छे. तेना द्वारा आपश्रीए 'मानसी सेवा' नी सिद्धि हेतु तनु-वित्तजा सेवा नो उपदेश आप्यो छे

श्रीमहाप्रभुजी सत्व - रज - तम ए त्रणेय प्रकृति ना गुणो वाळा जीवोना उद्धार माटे प्रयत्नशील रह्या छे. जगतानंद पंडित जेवा विनय, विचार, अने विद्वतासंपन्न सात्विक जीवोने माटे निबंध-अणुभाष्य-सुबोधिनी आदि ग्रंथो नी रचना द्वारा तेमने आकर्षिने शरणे लीधा छे. व्यवहार-निपूण वीरबाई (शेरगढस्थ) जेवा राजस जीवोने उत्तम प्रकारना व्यवहार द्वारा आकर्षित करीने पोताने शरणे लीधा छे. तथा, जेओ मूढ अने अहंकारी हता तेवा वासुदेवदास छकडा आदि तमोगुणी जीवोने चमत्कार द्वारा शरणे लीधा छे.

आम त्रणेय प्रकार ना जीवोनो उद्धार करी श्रीमहाप्रभुजीए पुष्टिमार्ग - कृपामार्ग नुं स्वरुप समजाव्यु छे, केमके जीवोना प्रकृति गत गुणोनो बदल्या विना तेमने शरणे लेवा तेज "पुष्टि" नुं लक्षण

छे.

आ नाम मां श्रीमहाप्रभुजी ना ऐश्वर्य धर्म नुं दर्शन थाय छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (२२)

****

श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र - नाम_ ६

****

श्रीगुसांईजीए श्रीमहाप्रभुजी नुं छठ्ठु नाम "स्मृतिमात्रार्तिनाशनः" बताव्यु छे, अर्थात् जेमना स्मरण मात्र थी आर्ति, एटले के आधि-व्याधि-उपाधि नो ऩाश थाय तेवा श्रीमहाप्रभुजी छे. आ नाम नुं विश्लेषण करतां, तेमां 'स्मृति', अर्थात् स्मरण, याद , 'मात्र' एटले केवळ, 'आर्ति', जेनो अर्थ दुःख अर्थात् संसार ना दुःख, तेमज 'नाशनः' तेनो नाश करवा वाळा छे, तेवुं तात्पर्य स्पष्ट पणे समजाय छे .

सुबोधिनीजी मां स्मरण नी व्याख्या करवामां आवी छे -" स्नेहात् अप्रयत्न विचारः ईति स्मरणः" अर्थात् स्नेह ना कारणे प्रयत्न कर्या विना ज जे मनमां विचार जागे तेने 'स्मरण' कहेवाय . आम स्मरण नुं कारण स्नेह छे. श्रीमहाप्रभुजी प्रत्ये उत्कट प्रेम ना कारणे तेमनुं सहज स्मरण थाय छे.

श्री दामोदरदास हरसानिजी नी पांच वर्षनी वये तेमना पिता तेमने लई श्रीमहाप्रभुजी ना प्राकट्य समये चंपारण्य गया हतां त्यारे आपश्रीना दर्शन करी तेओ आकुळ-व्याकुळ बनी गया हतां. त्यारथी तेमनी स्मृति जळवाई रहेली हती अने तेओ विव्हल दशामां रहेता हतां. प्राकट्य समयना श्रीमहाप्रभुजी ना दर्शन थी सतत् तेमनुं स्मरण हरसानिजी ने थया करतुं. ज्यारे श्रीमहाप्रभुजी प्रथम परिक्रमा करतां वर्धा पधार्या त्यारे तेमना आनंदमय स्वरुपना दर्शन थतां ज तेमना हृदयनी समस्त आर्तिओ दूर थई गई हती. तेमनी धन-लालसाना त्याग थी आधिभौतिक आर्ति नो नाश, विरहावस्थाना शमनना कारणे आध्यात्मिक आर्ति नो नाश, एवम् आपनी भूतल स्थिति दरम्यान अने भूतल स्थिति बाद स्मरण मात्र थी तेमनी आधिदैविक आर्ति निर्मूळ थई हती.

आम श्रीमहाप्रभुजी ना स्मरण मात्रथी श्री दामोदरदास जीना विरहतापने दूर करनार आपश्रीना चरित्रना कारणे श्रीगुसांईजी आपनें नाम "स्मृतिमात्रार्तिनाशनः" बतावे छे.

आपना स्वरुप नुं आ 'प्रमेय बल' छे, जे तेमना 'वीर्य' धर्म नुं सूचक छे.

...... क्रमशः.... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (२३)

****

***** श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र _ नाम -७ *****

****

श्रीमहाप्रभुजी नुं सातमुं नाम छे -"श्रीभागवत गुढार्थ प्रकाशन परायण". आपश्रीना भूतल पर प्राकट्य नो हेतु, जेम 'दैवी जीवोने उद्धार छे' तेम बीजो हेतु 'श्रीभागवत ना गूढ अर्थ ने प्रकट करवानो छे. श्रीभागवतजी पर अनेक विद्वानो / आचार्यो ए टिकाओ लखी छे, परंतु तेना गुढार्थने भगवन्मुखारविंद स्वरुप श्रीवल्लभ सिवाय अन्य कोण समजवी सके!

भागवत भगवान नुं नामात्मक स्वरुप छे. तेना बार स्कंध भगवान ना एक एक अंग रुप छे. तेना प्रथम अने द्वितीय स्कंधमां 'अधिकार लीला' अने साधन लीला नुं निरुपण करवामां आवुं छे, ज्यारे तृतीय स्कंध थी द्वादश स्कंध सुधीना दश स्कंधोमां भगवानकी दशविध लीलाओ - अनुक्रमे सर्ग-विसर्ग-स्थान-पोषण -ऊति-मन्वंतर-ईशानुकथा-विरोध-मुक्ति-आश्रय नुं विवेचन करवामां आव्युं छे.

श्रीमहाप्रभुजी ए पोताना तत्वार्थ दीप निबंध ग्रंथमां प्रथम प्रकरण मां खुलासो कर्यो छे के तेओ भागवत ना सात प्रकारे अर्थ प्रकट करशे. तदनुसार तेमणे तेना शास्त्रार्थ अथवा सर्वार्थ, स्कंधार्थ, प्रकरणार्थ, अध्यायार्थ, श्लोकार्थ, शब्दार्थ अने अक्षरार्थ प्रकट कर्या छे. प्रथम चार अर्थ नुं निरुपण तेमणे निबंधना 'भागवतार्थ प्रकरण' मां कर्या छे, ज्यारे पछीना त्रण अर्थो तेमणे भागवतनी सुबोधिनीजी नामनी व्याख्या मां समजाव्या छे. भागवतजी पर आटलुं उंडाणपूर्वक आलेखन शायद ज कोई अन्य आचार्यो ए कर्यु छे.

जोके स्वधाम पधारवानी भगवद् आग्या थतां सुबोधिनीजी नु लेखन कार्य पूर्ण थई शकेल नहीं, तेथी भागवतजी ना प्रथम त्रण स्कंध, दशम स्कंध तथा एकादश स्कंध ना चार अध्याय परज सुबोधिनीजी उपलब्ध छे.

श्रीमहाप्रभुजी ना आ ग्रंथो द्वारा ज आज आपणे भागवत नो साचो मर्म जाणी शकीए छीए. अतः आपनुं नाम "श्रीभागवत गुढार्थने प्रकाशन परायण" सार्थक छे. आ नाम आपना 'यश' धर्म नुं सूचक छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (२४)

****

******. श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र_नाम -८ ******

****

श्रीमहाप्रभुजी नुं आठमुं नाम श्रीगुसांईजी "साकार ब्रह्मवादैक स्थापक" बतावे छे. तेमना पूर्वे अन्य कोई ए ब्रह्म ने 'साकार' रुपे प्रस्तुत कर्या नथी. वेदादि शास्त्रो मां 'ब्रह्म' ने 'निराकार' तरीके वर्णव्या छे. अनेक रुषि-मुनिओए पण व्यापक निराकार ब्रह्म नुं निरुपण कर्युं छे. शंकराचार्यजी ईत्यादि ब्रह्म ने निर्गुण निराकार' ज बतावे छे.

परंतु श्रीमहाप्रभुजीए निबंध मां 'ब्रह्म' ना स्वरुप ने समजावतां कहे छे के ते 'ग्यान-क्रिया उभय शक्ति' युक्त छे जेनुं वर्णन श्रीमद् भागवत मां 'कृष्ण' स्वरुप थी करवामां आव्युं छे. श्रीकृष्ण 'आनंद' रसनुं घनीभूत साकार स्वरुप छे . तेथी तेमने समजावतां तेओ कहे छे - "आनंद मात्र करपाद मुखोदरादि". अर्थात् 'कृष्ण' ना प्रत्येक अंग आनंद रुप छे.

श्रीकृष्णे पोताना मातृचरण यशोदाजी ने स्वमुखमां समस्त ब्रह्मांड ना दर्शन कराव्या हता. तेवीज रीते पोताना सखा अर्जुन ने पण विराट स्वरुपना दर्शन करावी ने पोते परब्रह्म होवानुं प्रमाण आप्यु हतुं. भागवतमां साकार स्वरुपे श्रीकृष्ण नी अनेक लीलाओ नुं वर्णन करवामां आव्युं छे साथे एवा प्रमाणो प्राप्त थाय छे के तेमणे करेला कार्यो साधारण मनुष्य ना न होई शके ! ते सर्व लीला परब्रह्म परमात्मा नी ज होई शके ! श्रीकृष्ण नी बाललीलाओ, किशोरलीला, रासलीला वगेरे नो अनुभव तेओ 'साकार ब्रह्म' होवाने कारणे ज थाय छे.

श्री शुकदेवजी जेओ निराकार ब्रह्म नुं ध्यान धरतां हतां, तेओ श्रीमद् भागवत ना श्लोको नुं श्रवण करतां सगुण-साकार ब्रह्म ना गुणगान गावा लाग्या ! ए साकार ब्रह्म जेने पोतानी तरफ आकर्षे छे, ते पोतानुं सर्वस्व तेमना चरणोमां धरी दे छे. आवा साकार ब्रह्म नुं प्रतिपादन श्रीमहाप्रभुजीए भागवतजी ना आधारे कर्युं छे.

आपश्रीए आ 'साकार ब्रह्मवाद' नी स्थापना विष्णु स्वामी ना सिद्धांत अनुसार विद्वत्सभामां पूनः प्रस्थापित करी हती जेनो उल्लेख 'संप्रदाय कल्पद्रुम' आदि ग्रंथो मां मले छे.

आपश्री नुं आ नाम 'श्री धर्म' नुं सूचक छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (२५)

****

श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र _नाम -९

****

आ स्तोत्रमां श्रीगुसांईजी श्रीमदाचार्यचरण नुं नवमुं नाम "वेद पारगः" बतावे छे. कोईपण कार्य मां तेना फल पर्यंत नुं ग्यान मेळववुं आवश्यक छे. जेओ मात्र प्रस्थन-त्रयी अर्थात् वेद-गीता-ब्रह्मसूत्रो नोज स्वीकार करेछे, तेओ फल पर्यंत पहोंची शके छे के केम ते विचारणिय छे, कारणके भागवत ना मंगलाचरण "निगमकल्पतरोर्गलितं..........भुविभावुकाः" मां कहे छे तेम 'श्रीमद् भागवत ' वेद रुपी कल्पतरुनुं फल छे. माटे भागवतना ग्यान विना वेदना फल ने समजी न शकाय. श्रीमहाप्रभुजी भागवत रुपी फल सहित वेद रुपी कल्पवृक्ष नो विचार करवा वाळा, तेमां पारंगत छे. तदर्थ श्रीगुसांईजी ए आपने "वेद पारगः" कह्या छे.

सिद्धांत नुं प्रतिपादन द्रष्टांतथी सरळताथी समजी शकाय. वेदनां सिद्धांतोनुं - तेना तत्त्वग्यान नुं विविध कथाओ द्वारा भागवत मां निरुपण करवामां आव्युं छे. श्रीमहाप्रभुजी वेद -गीता-ब्रह्मसूत्र-भागवत, ए चारेय शास्त्रो ना निष्णात होवाना कारणे आपने "वेद पारगः" नाम आप्युं छे.

श्रीमहाप्रभुजी ज्यारे दक्षिण भारतमां मंगलप्रस्थ नामना स्थळे पधार्या त्यारे कोई ढुंडी नामना मायावादी पंडीते तेमना वेदना ग्यान नी परीक्षा करी हती त्यारे आपे 'अनुलोम-विलोम' (अवळा-सवळा) बन्ने रीते वेदपाठ करी पोतानी वेदनी पारंगततानुं प्रमाण आपेलुं.

तेवीज रीते वेणी नदीना किनारे आपश्री बिराजता हता त्यारे एक रविनाथ वैदिके वेदनी रुचाओ नो

पाठ एक एक एम सो पद छोडीने बोली जई ते पदो कहेवा जणाव्यु त्यारे श्रीमहाप्रभुजीए ते छोडेला सो पदो 'विलोम' (अवळेथी गणी शकाय तेम) उत्तर आपी पोतानी वेदनी पारंगतताने सिद्ध करी बतावी हती.

तेवाज अन्य प्रसंग मां वेत्रवतीमां ओरछा नरेश रामभद्र समक्ष आपश्रीए वेदमार्गनुं प्रतिपादन करी विजयपद्म प्राप्त कर्युं हतुं, जेना परिणाम स्वरुप राजाए श्रीमहाप्रभुजी नो कनकाभिषेक करेलो.

आवा अनेक प्रमाणो आपनी वेद ना ग्यान नी प्रविणताना द्योतक होवाथी श्रीगुसांईजीए आपेलुं "वेद पारगः" नाम सार्थक छे. आ नाम आपना "ग्यान" धर्म नुं सूचक छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (२६)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र_ नाम (१०)"

****

श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां श्रीमदाचार्यचरणनुं दशमुं नाम श्रीगुसांईजीए "मायावादनिराकर्ता" आप्यु छे. श्रीमहाप्रभुजीए पोताना प्राकट्य पूर्वे शंकराचार्यजी द्वारा प्रवर्तित "मायावद" नुं खंडन कर्युं हतुं. तेमना मत अनुसार 'ब्रह्म' निराकार, निरधर्मक छे अने जगत माया द्वारा निर्मित होई, मिथ्या छे. परंतु श्रीमहाप्रभुजीए अनेक शास्त्र-वचनो द्वारा आ मत ने खोटो पुरवार कर्यो हतो.

श्रीमदाचार्यचरणे श्रुति वचनो, गीता, भागवत ईत्यादि शास्त्रो ना आधारे सिद्ध करी बताव्यु छे के जगत नुं उपादान तेमज निमित्त कारण ब्रह्म छे तथा ते ज तेनो सर्जक पण छे. तदर्थ, 'सत् कार्य वाद' ना सिद्धांत मुजब जगत पण 'सत्य' ज होय.

श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के "स नैव रेमे, तस्माद् एकाकी न रमते, स द्वितीयम् ऐच्छत्, स हैतावानासेति, वगेरे वचनो ब्रह्म ना अलौकिक आकारनो निषेध न करतां तेनुं साकारत्व अने सधर्मकत्व सिद्ध करे छे . "आनंद मात्र करपाद मुखोदरादि" वचन अलौकिक आकारवाळा ब्रह्म नुं प्रतिपादन करे छे. तेओ ना मते संपुर्ण श्रुतिओनो समन्वय अने यथार्थ हार्द त्यारे ज समजी शकाय ज्यारे ब्रह्म मां 'सर्व कर्तुत्व', अने 'विरुदधधैर्याश्रयत्व' स्वीकारवा मां आवे.

भागवत कहे छे तेम ब्रह्म नी श्री-पुष्टि-गिरा-कांति.... ईत्यादि शक्तिओ मां 'माया' पण तेमनी ज एक शक्ति छे, जे ब्रह्म ने आधीन छे. तेथी माया स्वतंत्रतया कार्य करती नथी, अर्थात् शंकराचार्यजी माने छे तेम जगत माया-जनीत मानवुं खोटुं छे.

गीताजीमां माया ने सुक्ष्म अने प्रकृति पण कही छे. सत्वादी गुणो भगवान मां थी प्रकट थया छे. सृष्टि क्रियामां वैचित्र्यार्थे मायामां भगवाने आ गुणो स्थापित कर्या छे, तेथी तेने गुणमयी कही छे. भगवान अने भगवाननी शक्ति उभय अभिन्न छे. भगवान अने तेमना धर्मो एकज छे. तेथी माया भगवान नुं 'सर्वभवन सामर्थ्य' छे. परंतु प्रभु ने स्वभोगार्थे अने दैत्योने व्यामोह करावावानुं कार्य पण माया करे छे.

श्रीमहाप्रभुजी, तेथी कहे छे के 'साकार' अने 'निराकार' ब्रह्म ना भेद मायाथी भ्रांत थयेला कहे छे अने मिथ्याभास उभो करी जीवोने अवळे मार्गो लई जाय छे. तेथी तेमणे आवा कल्पित वेद-विरुद्ध

मायावादीओ नो निरास कर्यो छे. माटे श्रीगुसांईजीए आपनुं नाम "मायावादनिराकर्ता" प्रकट कर्युं छे. तेमनुं आ नाम " वैराग्य" धर्म नो सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (२७)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र" _नाम (११)

****

प्रभुचरण श्रीगुसांईजी ए श्रीमहाप्रभुजी नुं अगीयारमुं नाम -"सर्ववादि निरासकृत्" बताव्यु छे. अगाउ जोयुं तेम श्रीमहाप्रभुजीए 'मायावादीओने परास्त कर्या छे, परंतु ते सिवाय अन्य सर्वे वादोनो पण निरास कर्यो छे, अर्थात् तेमने पराजित कर्या छे.

भूतल परिक्रमा दरम्यान ज्यारे तेओ उज्जैन पधार्या त्यारे तेमणे सांदिपनि रुषि ना आश्रम नजीक मुकाम करेलो हतो. पोते बिराज्या हतां त्यां एक पीपळानुं पान उडीने आव्युं. आपश्रीए ते लई जमीन मां खोसी दीधुं. एक रात मां तो ते पान वधीने विशाळ वृक्ष बनी गयुं. उज्जैन मां अनेक विद्वानो वसतां होवा छतां आ चमत्कार जोई कोईपण मतवादीए तेमनी साथे शास्त्रार्थ करवा आववानी हिंम्मत करी नहीं.

ज्यारे आपश्रीए भागवत ना प्रवचन नो प्रारंभ कर्यो त्यारे स्वयं श्री महादेवजी ते श्रवण करवा पधार्या. श्रीमहाप्रभुजीए श्रीमहादेवजीने कह्युं के अमे अहीं ब्रह्मवाद नुं स्थापन करवा आव्या छीए, परंतु अमारी साथे कोई विद्वान शास्त्रार्थ करवा आवता नथी तो आप तेमने प्रेरणा करी मोकलो.

श्रीमहादेवजीनी प्रेरणा थी अनेक मतवादीओ आपश्री साथे शास्त्र चर्चा करवा आप्या. तेमणे सो जणाए एक साथे सौ ने जवाब आपवामां कह्यु. आपश्रीए बधाना प्रश्नो सांभळी एक साथे बधाने उत्तर आपी चकित करी दीधा. आम बधाने निरुत्तर करी तेमणे ब्रह्मवाद नुं स्थापन कर्युं . आम अनेक स्थाने पर आपश्रीए सर्व वादीओने निरास कर्या.

आपे बोद्धोने, जैनोने, शाक्तोने ईत्यादि अन्य मतोनुं खंडन करी ब्रह्मवाद नुं प्रतिपादन कर्युं होवाथी आपनुं "सर्ववादिनिरासकृत्" नाम सार्थक छे. आ नाम आपश्रीनुं "धर्मी" स्वरुप सूचवे छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (२८)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र _नाम (१२)

****

श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां श्रीमहाप्रभुजीनुं बारमुं नाम "भक्तिमार्गाब्ज मार्तंडः" बताव्यु छे. आ नाम अति सार-गर्भित छे. आ नाम मां त्रण शब्दो समाविष्ट छे - भक्तिमार्ग, अब्ज अने मार्तंड. श्रीगुसांईजी

श्रीमदाचार्यचरण ने भक्तिमार्ग' रुपी कमलने खीलावनार सूर्य नी उपमा आपे छे. जेवी रीते कमल नो विकास सूर्य द्वारा थाय छे, तेवीज रीते श्रीमहाप्रभुजीए भक्तिमार्ग नो विकास कर्यो छे. कमलना द्रष्टांतथी तेमणे पुष्टिभक्ति ने कोमल, तापहारी अने मनोहर बतावी छे.

कमळमां त्रण गुण होय छे - ते जल्दी करमाई जाय तेवुं कोमल होय छे, बीजुं ते शीतळता आपे छे, अने त्रीजुं ते चित्ताकर्षक सुंदर होय छे. 'भक्ति' नुं तात्पर्य पण मुख्यत्वे भगवद्-प्रीति, स्नेह छे, अर्थात् प्रभु प्रत्ये कोमळ लागणी नी अभिव्यक्ति छे. ते भक्त ना हृदयना तापने हरनारी छे. श्रीपुरुषोत्तमजी ए भक्ति शब्द नो अर्थ कर्यो छे -'स्नेहपूर्वक प्रभु नी सेवा'. नारदजी पण भक्ति नी परिभाषा बतावे छे - 'माहात्म्य ग्यान पूर्वक भगवान मां सुद्रढ सर्वतोधिक स्नेह, तेने भक्ति कहेवाय'.

पुष्टिभक्ति मर्यादाभक्ति, जे 'सकाम होय छे, तेनाथी विलक्षण छे. ते निष्काम होय छे. तेमां मात्र भगवद् सुख नोज विचार रहेलो होय छे. आवी भक्ति नो मार्ग छे ते कमळ नो मार्ग छे जेम कमळ कादवमां रहे छे ते संसार रुपी कादवमां रहीने पण भक्ति नो मार्ग पुष्टि जीवने शुद्ध राखे छे. प्रभु प्रत्ये शुद, कोमळ, स्नेह युक्त भाव वाळा पुष्टिजीव नुं भक्ति रुपी कमलने श्रीमहाप्रभुजी रुप सूर्य खीलवे छे.

कहे छे -"भक्तयोगो बहुविधो", अर्थात् भक्तिमार्ग नी अनेक शाखाओ प्रसरेली छे. पुष्टिभक्तिमार्ग शुद्ध शरणागति नो मार्ग छे. कलिकालमां अन्य मार्गो दुष्कर बनवाना कारणे संवत १५४९ मां गोकुळ मां गोविंद घाट पर श्रावण सुद एकादशी नी मध्यरात्रीए साक्षात् पुर्णपुरुषोत्तम प्रभु ए प्रकट थई श्रीमदाचार्यचरण ने ब्रह्मसंबंध नो उपदेश कर्यो अने तदनुसार आपे भक्तिमार्ग नो विकास कर्यो छे .

आ नाम श्रीमहाप्रभुजी ना "ऐश्वर्य" धर्म नुं सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (२९)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (१३)

****

श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां श्रीमहाप्रभुजीनुं चौदमुं नाम श्रीगुसांईजीए "स्त्रीशूद्राद्युतिक्षमः" आप्यु छे. तेमां शब्दो छे _स्त्री - शुद्र - आदि - उद्धृति - क्षमः, एटले के जेओ स्त्री, शुद्र आदिनो उद्धार करवा माटे समर्थ छे.

वेदमां ब्राह्मण, क्षत्रिय अने वैश्य ए त्रिवर्गनेज भक्तिनो अधिकार आपवामां आव्यो छे. अन्य भक्तिमार्गीय सिद्धांतोमां पण ते त्रिवर्ग ना उद्धार नो ज उल्लेख मळे छे. तेमां स्त्रीओ अने शुद्र ने भक्ति नो अधिकार प्राप्त नथी.

श्रीमहाप्रभुजीए पुष्टिभक्तिमार्ग मां स्त्री -शुद्र सहित, कोईपण जाति-भेद विना प्राणीमात्र सौनो अंगीकार करी तेमने भक्ति नो अधिकार आप्यो छे.

तेमना मते स्त्रीओमां भक्ति नो सहज भाव होय छे. तेमज शुद्रो पण समाजमां भावथी सेवा करतां होय छे. आम तेमनामां भक्ति - सेवा नो भाव सहज अने विशेष होय छे. तेथी तेमने वंचित न राखतां तेओने पण 'ब्रह्मसं◌ंबंध' नी दीक्षा आपी शरणे लीधा छे अने तेमनो उद्धार कर्यो छे.

तेमने बनावेला ८४ सेवको मां 'एका क्षत्राणी' तथा 'यादवेंद्रदास कुंभार' नो उल्लेख मळे छे. श्रीगुसांईजी ना सेवक मोहना भंगी-चहुडा ऩो श्रीनाथजी साथे खोलवा नो प्रसंग जाणीतो छे . आम श्रीमहाप्रभुजीए कोइपण वर्ण के जाति ना भेद भाव वगर सौने पुष्टिमार्ग मां प्रवेश आप्यो छे ते तेमना विशेष सामर्थ्य ने उजागर करे छे.

आ प्रकारनी अंगीकृति नो शास्त्रीय आधार श्रीमद् भागवत मां एवम् गीतामां पण मळे छे.

तदर्थ श्रीगुसांईजीए तेमने आपेलुं "स्त्रीशूद्राद्युतिक्षमः" नाम सार्थक छे. तेमनुं आ विलक्षण नाम तेमनां "वीर्य धर्म" नुं सूचक छे .   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (३०)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र _ नाम (१४) "

****

श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां श्रीमहाप्रभुजीनुं चौदमुं नाम श्रीगुसांईजीए "अंगीकृत्यैव गोपीश वल्लभीकृत मानव" आप्युं छे. तेनुं तात्पर्य छे के जेमनो तेमणे अंगीकार कर्यो छे ते मानवोने तेओ श्रीगोपीजनोना ईश श्रीकृष्ण ना प्रिय बनावी दे छे. जे जीवोने तेमणे स्वीकार कर्यो छे, अर्थात् अंगीकार कर्यो छे, तेमने श्रीमहाप्रभुजीए श्रीठाकोरजी ना वहाला बनावी दीधा छे.

आ नाम मां श्रीगुसांईजी आपश्री नुं विलक्षण स्वरुप बतावे छे. जेने श्रीमहाप्रभुजी पोतानो सेवक बनाने छे, ते पछी ते आपनी आग्यानुं पालन करे छे के नथी करतो ते जोता नथी, परंतुं ते जीवने श्रीठाकोरजी ने सोंपी तेने क्यारेय न छोडवानी विनंति करे छे. ए रीते श्रीवल्लभ द्वारा जे जीव प्रभु ने शरणे जाय छे, तेने श्रीठाकोरजी वधारे प्रिय बनावे छे.

प्रभु पण शरणे आवेला अंगीकृत जीवना दोष जोता नथी. आनुं प्रत्यक्ष उदाहरण आपश्रीना सेवक रामानंद पंडित ना वार्ता प्रसंग मां मळे छे. एक समये श्रीमहाप्रभुजी पोताना सेवकोने साथे तेमने त्यां पधारी रात्री मुकाम कर्यो हतो. रामानंदे वहेली सवारमां पोतानी पत्नीने गोबर भेगुं करी लेवा कह्यु जेथी बीजा वैष्णवो लई न जाय. श्रीमहाप्रभुजीने आ सांभळी ने खेद थयो, केमके रामानंदे वैष्णवो ने चोर समज्या. तेथी आपश्री तेनो त्याग करी अन्यत्र पधारी गया. रामानंदने भूल समजाता क्षमा याचना करी पण श्रीमहाप्रभुजी अप्रसन्नज रह्या, जेथी तेमने अति दुःख थयुं◌.

अर्धपागल जेवी अवस्था मां तेओ एक समये रस्ता परथी पसार थतां कोई हलवाईनी दुकाने सुंदर जलेबी उतरती जोई, तेथी ते प्राप्त करी मनथीज श्रीजीने आरोगवा विनंति करी. त्यारे जतिपुरामां श्रीनाथजी ने राजभोग सरावतां तेमां जलेबी नो टुक जोई श्रीमहाप्रभुजीए पुछतां श्रीजीबावाए खुलासो कर्यो के तेमना सेवक रामानंदे ते आरोगावी छे. आपश्रीए कह्यु के तेमणे तेनो त्याग कर्यो छे, त्यारे प्रभु ए कह्यु के "जेनो हाथआप मने सोंपो छो तेनो हुं कदी त्याग करतो नथी".

आ नाम द्वारा श्रीगुसांईजीए श्रीमहाप्रभुजी द्वारा अंगीकृति नो महिमा बताव्यो छे. आ नाम आपश्रीना 'यश धर्म' नुं सूचक छे.   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी"   (३१)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र" _ नाम (१५)

****

श्रीगुसांईजीए श्रीमहाप्रभुजी नुं पंदरमु नाम "अंगीकतौ समर्यादः" आप्यु छे. श्रीमहाप्रभुजी जीवने ष्रीठाकोरजी पासे भक्ति नो स्वीकार करावी 'पुष्टि' अर्थात् कृपानी मर्यादा थी अंगीकार करावे छे. भक्ति ना अनेक विकल्प होई शके छे, जेवाके सेवा द्वारा, कथा द्वारा, निःसाधनताथी, भगवद् गुणानुवाद द्वारा, केल़विरहना अनुभव थी भक्ति अभिव्यक्त थाय छे.

भक्त नी भक्ति नो अनुभाव भगवान नी कृपा छे. भगवद् कृपा केटली, क्यारे, कईरीते थाय ते कोई कही शके नहीं. श्रुति कहे छे, भगवान प्रवचनोथी, बुद्धि थी के बहु सांभळवाथी नथी मळता, परंतु तेओ जेना पर अनुग्रह करे तेने प्राप्त थाय. जीव दुष्ट होय तो पण ते जेने मळवा मांगे, जेना पर कृपा करे तेने मळी शके छे. कारणके तेओ स्वतंत्र छे.

तदर्थ श्रीगुसांईजी समजावे छे के भगवान नी कृपा नी मर्यादा छतां जीवना दोष जोया वगर श्रीमहाप्रभुजी जेना पर कृपा करी तेनो अंगीकार करे छे तेनो उद्धार करे छे.

तद्विषयक वार्ता साहित्य मां वांसवाळाना गोपालदासनुं उदाहरण मळे छे. श्रीमहाप्रभुजीए केवळ जलनी अंजली छांटीने तेमनो उद्धार कर्यो हतो. बीजुं उदाहरण बेठक चरित्र मां प्राप्त थाय छे. श्रीमहाप्रभुजीए नंदगाममां पानसरोवर पर एक घोडो जे दैवी जीव हतो, तेना पर मात्र द्रष्टि करी अनुग्रह द्वारा तेनो अंगीकार करी उद्धार कर्यो हतो.

आम श्रीमहाप्रभुजी नु आ नाम "अंगीकृति समर्यादः" सार्थक छे. आ नाम आपश्रीना "श्री धर्म" नु सूचक छे.   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी"   (३२)

****

श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र _ नाम (१६)

****

श्रीगुसांईजीए श्रीमहाप्रभुजी नुं सोलमुं नाम "महाकारुणिकः" आप्यु छे. श्रीमहाप्रभुजी कृपा ना निधि होवाना कारणे अत्यंत करुणामय छे. करुणा मां कृपानुं बीज छुपायेलुं छे. करुणा विना कृपा न थाय . श्रीठाकोरजी तेमज श्रीमहाप्रभुजी बन्ने करुणासिंधु छे. तेथी निजजनो पर कृपा करे छे.

अानुं उदाहरण भगवान श्रीरामचंद्रजी छे. तेओ 'मर्यादा पुरुषोत्तम' होवा छतां करुणा ने कारणे

शुद्र जाती नी पतित स्त्री शबरी आदि ना उद्धार ना 'पुष्टि-कार्यो कर्या हतां. तेवीज रीते श्रीवल्लभाधीश प्रभु पण महा करुणावान होवानो कारणे तेमणे पण स्त्री शुद्र पतित अस्पृश्य ईत्यादि अनेक जीवोने अंगीकार कर्या होवाना प्रमाण मळे छे. तेथीज अगाउ आपश्री नुं नाम "स्त्रीशूद्राद्युतिक्षमः" कह्यु छे.

श्रीमदाचार्यचरणने शरणे आवेला जीवो मां विभिन्न प्रकार जोवा मळे छे - केटलाक जीवो श्रीमहाप्रभुजी ना स्वरुपमां आसक्त होय छे, वळी केटलाक तेमना ग्रंथो नो आश्रय करतां होय छे. कोईक तो श्रीभगवत् स्वरुपमां श्रीमहाप्रभुजी न भावना करतां होय छे. केटलाक आपश्री ना वसंतनी अथवा हस्ताक्षरनी सेवा करतां होय छे. आवा उदाहरण आपणने वार्ता साहित्य मां मळे छे, जेवा के दामोदरदास हरसानिजी, कृष्णदाय मेघन, कनैया शाल, शेठ पुरुषोत्तम दास, रजोबाई, विष्णुदास छीपा वगेरे.

आ सर्वे सेवकोने श्रीमहाप्रभुजी परत्वे एकांगी सर्वात्मना भक्ति सिद्ध थवानुं कारण आपश्री नुं 'महाकारुणिकपणुं' हतुं, ते वार्ता प्रसंगो मां थी स्पष्ट थाय छे.

जे 'साधन' नुं दान करे, तेने 'कारुणिक' कहेवाय, परंतु जे साधन अने फल बन्ने नुं दान करे तेने 'महाकारुणिक' कहेवाय. श्रीमहाप्रभुजीए श्रीठाकोरजी ने प्राप्त करवा सेवा नो सिद्धांत समजाव्यु छे, साथे 'सेव्य स्वरुप' ने पधरावी साक्षात् श्रीकृष्ण ने पण 'निज जनोने सोप्या छे. अतः आपनुं "महाकारुणिकः" नाम सार्थक छे. आ नाम अापना 'ग्यान धर्म' नुं सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (३३)

****

"श्रीसर्वोतम स्तोत्र"_ नाम (१७)

****

श्रीमहाप्रभुजी नुं सत्तरमु नाम श्रीगुसांईजीए "विभु" बताव्यु छे. आ नाम सार गर्भित छे. जेमनी पासे चौद लोकनो अवर्णनिय वैभव होय तेने "विभु" कहेवाय. भगवान विविध लीलाओ करवा माटे तद्विषयक आवश्यक सामर्थ्य साथे पोताना अंश-कला-गुण वगेरे नुं स्वरुप प्रकट करे छे. तेने अंशावतार, कलावतार के गुणावतार कहे छे. ते सर्वे स्वरुपो भगवान नी विभुतिओ कहेवाय छे. परंतु भगवान स्वयं 'विभु' कहेवाय.

श्रीमहाप्रभुजी पण आवा 'विभु' छे, कारण के तेओ साक्षात् 'भगवदावतार' छे. तेथी तेओ पोताना जीवोने भगवद् स्वरुपे दर्शन दीधा छे, अनुभव कराव्यो छे. एवा अनेक प्रमाणो तेमना जीवन चरित्र मां प्राप्त थाय छे.

उज्जैन ना पद्मा रावलने श्रीरणछोडजी ना स्वरुप मां आसक्ति हती. सर्वग्य श्रीमहाप्रभुजीए ते वात जाणी, पद्मा रावल मूलतः पुष्टिजीव होवाथी तेने ते स्वरुप नो अनुभव करावी तेनो अंगीकार कर्यो हतो. तेवीज रीते आपे अडेलमां मावजी पटेल तथा बिरजोने पण श्रीरणछोडजी स्वरुपे दर्शन आप्या हतां

ज्यारे श्रीमहाप्रभुजी वडनगर पधार्या हतां त्यारे त्यानां ब्राह्मणो तेमने शरणे आव्या हतां. त्यारे सौ कोईए प्रथम दीक्षा लेवानी होड लगावी हती. आपश्रीए त्यारे बधाने संतोष आपवा जेटला ब्राह्मण हतां तेटला रुप धारण करी सौने एक साथे ब्रह्मसंबंध नी दीक्षा आपी हती. आ धटना तेमनुं. "विभु" होवानुं बतावे छे.

दक्षिण यात्रा दरम्यान श्रीमहाप्रभुजी कांचीपुरम् मां'वरदराज भगवान' ना दर्शने पधार्या हतां. परंतु

मंदिरना पगथीये जयदेवजीनी अष्टपदीओ आलेखायेली होवाथी ते भगवद् नाम होई पोताना चरणार्विंद तेना पर न रखाय माटे मंदिरमां पोते पधार्या न हतां. त्यारे वरदराज स्वामी स्वयं श्रीमहाप्रभजी ना मुकामें सामेथी पधारी ने दर्शन आप्या हतां. (ए स्थळेज कांचीपुरम् मां आपना बेठकजी छे).

आम आप "विभु" होवाथी अनेक ने विभुति स्वरुपे दर्शन आप्या ना प्रमाण छे. तदर्थ श्रीगुसांईजी ए आपश्री नु आ नाम आपेलु सार्थक छे.

आ नाम आपना "वैराग्य धर्म" नुं सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"विठ्ठल वाणी" (३४)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_ नाम (१८)

****

श्रीमहाप्रभुजीनुं अढारमु नाम श्रीगुसांईजीए "अदेयदानदक्षस्च" बताव्यु छे. अदेय - दान - दक्ष, एम त्रण शब्दोना बनेला आ नाम नो अर्थ थाय _ जे न आपी शकाय तेवुं दान आपवा मन मां चतुर छे.

अन्य धर्माचार्योमां भक्ति मुक्ति वगेरे पुरुषार्थो सिद्ध करवानुं सामर्थ्य होय छे. परंतु श्रीमहाप्रभुजी आधिदैविक प्रेमलक्षणा भक्ति अने रसात्मक भगवत् स्वरुप नुं कोई न आपी शके तेवुं 'अदेय' दान आपवानुं सामर्थ्य धरावे छे.

पुष्टिमार्गनुं परम फल आधिदैविक भजनानंद छे. भगवान नी सर्वलीलाओ मां रासलीला आधिदैविक भजनानंद नी लीला छे. श्रीमहप्रभुजी स्वयं भगवत् स्वरूप होवाथी दैवी जीवने शरणे लईने भजनानंदनी लीलानी प्राप्ति करावववा सक्षम छे.

आ नाम मां 'च' अक्षर श्रीमहाप्रभुजी नुं विशेष सामर्थ्य सूचवे छे. तेओ दान आपवामां दक्ष' अर्थात् अति चतुर होवाथी पुष्टिजीवोने तो विशेष दान ना उत्तराधिकारी बनावी भजनानंद नुं दान करे छे. एटलुंज नहीं, मध्यम जीवोने सामान्य दान आपी द्वारका लीला आदिना फल पण आपे छे. अपना शरणे आवनार अन्य मर्यादामार्गीय जीवोने साधन साध्य फल आपवानुं सामर्थ्य आपश्री धरावे छे. आम आपना संपर्कमां अनेक जीवो आवेला हतां तेमां तेमना अधिकार मुजब आपे तेमनो उद्धार कर्यो छे. ते आपनी दक्षता - निपुणता सूचवे छे.

श्रीमहाप्रभुजीना स्वरुप विशे दामोदरदास हरसानिजीए श्रीगुसांईजीने कहेलुं के श्रीआचार्यजी दाता रुपे मोटा छे, कारणके आपे पोतानुं सर्वस्व निगूढ धन श्रीनाथजी नुं अमूल्य दान जीवोने आप्यु छे.

आ नाम अपना 'धर्मी स्वरुप' नुं सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (३५)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र_नाम (१९)"

****

श्रीमहाप्रभुजीनुं ओगणीसमुं नाम श्रीगुसांईजीए "महोदार चरित्रवान" बताव्यू छे. अगाउना नाममां आपश्री 'अदेय दान आपवावाला' होवानुं प्रतिपादित कर्यु. हवे कहे छे के तेओ दान आपवामां दक्ष तो छेज, परंतु महा उदार पण छे. 'महोदार' तेने कहेवाय, ज्यारे दाता दान आपती वखते जेने दान देने दई रह्या होय तेनी योग्यता- अयोग्यता नो बहु विचार न करे, के न तेनाथी पोताने शुं लाभ थशे तेनी गणत्री करे.

श्रीमहाप्रभुजी पण जीवनी बुद्धि, शक्ति के कृतिनो विचार करता नथी. छेनी पात्रता छे के नहीं, तेने शुं आपवुं योग्य छे, एवो विचार क्यारेय करता नथी. तेथी आपश्री नी 'महोदारता' चरितार्थ थाय छे. आ हकिकतना अनेक उदाहरण तेमना प्रसंगोमां प्राप्त थाय छे.

भगवद् प्राप्ति नाम साधन क्रममां "मानसी सेवा" ने परम बतावी छे. तेनी सिद्धिने माटे श्रीमहाप्रभुजीए 'तनुवित्तजा' सेवानुं विधान करेलुं छे. परंतु आश्रीए महोदारता ना कारणे गोविंद कुंड पर गुफामां रहेता अच्चुतदासजीने 'तनुवित्तजा' सेवा कर्या विनाज सीधी 'मानसी सेवा' नुं दान करी दीधुं हतुं, अने अंतिम लक्ष्य सिद्धि प्राप्त करावी हती.

तेवीज रीते आपे त्रिपुरदास कायस्थ ने पण मानसी नुं दान कर्युं हतुं. तेथी त्रिपुरदास नो सामान्य छींटनो गदल श्रीनाथजी ए मांगीने अंगीकार कर्यो हतो. तेमनी इच्छानुसार तेमने तेमनी दृष्टि समिप सदाए श्रीनाथजी ना दर्शन थतां हतां.

आवी सर्वे हकिकत श्रीमहाप्रभूजीनी महोदारतानुं चरित्र-दर्शन करावे छे. तदर्थ आपश्रीनुं "महोदार चरित्रवान" नाम सार्थक छे. आपनुं आ नाम अपना 'ऐश्वर्य धर्म' नुं सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (३६)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (२०)

****

श्री सर्वौत्तमजी मां श्रीमहाप्रभुजीनुं वीसमुं नाम "प्राकृतानुकृतिव्याज मोहितासुरमानुषः" बताव्यु छे. आमां छ शब्दो जोडवामां आव्या छे - प्राकृत + अनुकृति + व्याज + मोहित + असुर + मानुषः . प्राकृत एटले लौकिक मनुष्य नुं अनुकरण करनारा, लौकिक मनुष्य जेवा देखाईने आसुरी जीवोने मोह पमाडनारा श्रीमहाप्रभुजी छे. जे जीवो प्रवाही अर्थात् आसुरी छे तेवा पोतानी महोदारता नो गेरलाभ न ले ते आशय थी श्रीमहाप्रभुजी तेवाओने दूर राखवा माटे लौकिक मनुष्यो जेवी लीला करे छे.

श्रीमहाप्रभुजीना संपर्क मां प्रवाही, मर्यादा तेमज पुष्टि एम अनेक प्रकार ना जीव आवेला. मर्यादा जीवोनो उद्धार तेमणे मर्यादा थी करेलो, अने जेओ पुष्टि जीव हतां तेमने सामेथी शरणे लईने पुष्टि थी उद्धार कर्यो हतो, परंतु जेमनुं जीवन लौकिक प्रवृत्तिमय विषयासक्त हतुं, तेना आसुरी प्रकारना जीवो भक्तिमार्गमां टकी शके नहीं. तेवा लोकोने तेओ पोताना साचा स्वरुप नी ओलख थवा देता नहीं.

जेमनुं जीवन भोग मांज रत होय तेवा प्राकृत मनुष्यो तेमज जेमने केवल शास्त्र नुंज ज्ञान छे तेना

पंडितो पण श्रीमहाप्रभुजीना दर्शन माटे आवतां त्यारे तेमने ते समये एक सामान्य मनुष्य होवानो अहेसास थतो. तेओ कोई महापुरुष छे, तेवी अनुभूति आप दवा देता नहीं. ज्यारे सोरमजीमां कृष्णदास मेधनना गुरु केशवानंद योगी ने कृष्णदास हाथ मां अग्नि लई ने प्रतीति कराव्या छतां तेओ मानवा तैयार नथी होता के श्रीमहाप्रभुजी पुर्णपुरुषोत्तम छे.

जेवी रीते निम्बार्क संप्रदाय ना आचार्य केशव भट्ट आपश्रीने विद्वान समजतां परंतु, तेमने भगवत्स्वरुप स्वीकारवा तैयार न हतां.

आ नाम आपश्री नुं 'वीर्य धर्म' नुं सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (३७)

****

"श्रीसर्वोतम स्तोत्र"_नाम (२१)

****

श्रीमहाप्रभुजीनुं एकवीसमुं नाम श्रीगुसांईजीए "वैश्वानर:" आप्युं छे. तेमणे 'वल्लभाष्टकम्' मां श्रीमहाप्रभुजीने "वस्तुत: कृष्ण एव" कह्यु छे. भगवान श्रीकृष्ण गीताजी मां अर्जुनने कहे छे -अहं वैश्वानर:". वैश्वानर एटले अलौकिक अग्नि. वेद मां अग्नि ने भगवाननुं मुख कह्यु छे. तेथीज यज्ञना अग्नि मां आपेली आहुति भगवान ग्रहण करे छे. श्रीमहाप्रभुजी भगवान ना मुखार्विंद स्वरुप होवाथी तेमने 'वैश्वानर' कह्या छे.

'वल्लभाष्टक' ग्रंथमां श्रीगुसांईजीए स्पष्ट कर्यु छे के त्रणेय लोकमां आपश्रीनुं ग्नित्व कवियो द्वारा वर्णित छे. आनुं प्रमाण श्रीमहाप्रभुजीना चरित्रमां मले छे, ज्यारे एक वैष्णव द्वारा लवायेली औषधनी पडीकी आपश्रीए अग्नि मां पधरावी दीधी हती अने अपनी अस्वस्थता दूर थई गई हती.

श्रीमहाप्रभुजीए पोताना अग्नि स्वरुप ना दर्शन गुजरातना महमूद बेगडा अने दामोदरदास हरसानिजीना भाईओने वगेरेने कराव्यो हतो. ज्यारे हरसानीजीना त्रण भाईओ तेमने पाछा लई जवा आव्या त्यारे आपश्रीए पोताना अग्नि स्वरुप ना तेमने दर्शन कराव्या हतां, जेनाथी डरीने ते भाईओ नासी गया हतां.

तेना विशे भाव-प्रकाश मां समजाव्यु छे के दामोदरदासजीना त्रण भाईओ काम, क्रोध अने लोभना स्वरुप हतां, जे भक्तिमां बाधारुप छे. लौकिक सुखनी कामना, ते न भोगवाय तो क्रोध आवे, अने भोगवाय तो ते वधु भोगववानो लोभ जागे, जे भक्ति करवामां विक्षेप बने. तदर्थ, श्रीमहाप्रभुजीऐ तेना प्रतिकात्मक ते भाईओने पोताना अग्नि स्वरुपनो परचो बतावी दूत कर्या हतां.

श्रीमहाप्रभुजीना "वैश्वानर" नामना जप करवाथी वैष्णवना मनना काम, क्रोध, अने लोभने नष्ट करी जेनी भक्ति ना नडतरने दूर थाय छे.

आ नाम आपश्रीना 'यश धर्म' नुं सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"विठ्ठल वाणी" (३८)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र" _नाम (२२)

****

श्रीसर्वोत्तमजीमां श्रीमहाप्रभुजीनुं बावीसमुं नाम श्रीगुसांईजीए "वल्लभाख्य" आप्यु छे. 'वल्लभ' अने 'आख्य' एम बे शब्दोथी आ नाम बन्यु छे. जे सौने 'वल्लभ' अर्थात् प्रिय, वहाला छे, तेलों अच्छा छे. 'आख्य' नो बीजो अर्थ 'प्रसिद्ध' पण थाय. जेओ आ नाम थकी ज ओलखाई जाय, जेमनुं नाम ज तेमनो परिचय छे, ते 'श्रीवल्लभ', ए छे आ नामनुं तात्पर्य.

श्री आचार्य जी अग्नि स्वरुप होवाथी तेजस्वी स्वभाव वाला छे. आपश्री स्वकीयजनो उपर अति शितलता युक्त अमृतद्दष्टि करवावाला छे. अने तेथी सर्व कालमां सर्वने प्रिय छे. व्यक्ति मां प्रियत्व अमृत ना कारणे, मीठाशना कारणे आवे. श्रीमहाप्रभुजीना वदन पर सदा मधुरता होय छे, आपश्रीना नेत्र थी आपणी सामे जोई मृदु हास्य करतां अनुभवाय, तेमना दर्शन करतां आपणा ह्रदयमां आनंद उच्छलित थई जाय तेवुं आपनुं व्यक्तित्व छे.

पूर्व नाम 'वैश्वानर' थी आपनुं अग्नि स्वरुप बताव्यु अने आ नामथी तेमनुं प्रिय स्वरुप समजाव्यु, तेम बन्ने परस्पर विरुद्ध गुणोनुं प्रतिपादन करी आपनामां रहेली 'विरुद्धधर्माश्रयता' नो परिचय श्रीगुसांईजीए कराव्यो छे.

'सौंदर्य पद' मां कह्यु छे - "रुपं तत् त्रितयात्मकं परम भिधेयं सदा वल्लभम्". अर्थात् नित्य लीला मां पण आपश्रीनुं नाम 'वल्लभ' ज छे.

माधव भट्ट काश्मीरी ज्यारे पोताना गुरु निम्बार्काचार्य केशव भट्ट साथे वृंदावन मां श्रीमहाप्रभुजीनी कथानुं श्रवण करवा आव्या त्यारे पोताना अत्यंत मनोहारी प्रिय स्वरुपना दर्शन आप्या हतां.

आम आपनुं 'वल्लभाख्य' नाम सार्थक छे, जे आपना "श्री धर्म" धुन सूचक छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (३९)

****

"श्रीसर्वोत्त स्तोत्र"_ नाम (२३)

****

श्रीमहाप्रभुजीनुं त्रेवीसमुं नाम श्रीगुसांईजीए "सद्रुप" बताव्यु छे. आ नाम सारगर्भित छे. आनी संगती आपना आ पहेलाना बन्ने नामो 'वैश्वानर' तथा 'वल्लभाख्य' साथे छे. आ त्रणेय नाम सामुहिक रुपे 'सच्चिदानंद' नुं सूचक छे. भगवान जेम सच्चिदानंद स्वरुप छे, तेम श्रीमहाप्रभुजी पण सच्चिदानंद स्वरूप छे, तेम श्रीगुसांईजी समझावी रह्या छे.

'वैश्वानर' नामथी आपनुं 'चित्' स्वरुप अने 'वल्लभाख्य' नामथी आपनु 'आनंद' स्वरुप छे, तेम 'सद्रुप' नाम 'सत' तत्त्व नुं द्योतक छे. आ नाम आपना अलौकिक देह नुं सूचक छे. एटले के श्रीमहाप्रभुजीनो

देह लौकिक पंचमहाभूतो थी बनेलो नथी, परंतु अलौकिक पंचमहाभूतो नो बनेलो छे. लौकिक पंचमहाभूत 'कार्य रुप' होय छे, ज्यारे अलौकिक पंचमहाभूतो 'कारण रुप' होय. आम श्रीमदाचार्यचरण सत् रुप, कारण रुप अलौकिक अने नित्य छे. आवुं 'सन्मनुष्याकृति रुप आपनुं स्वरुप छे.

आपना अलौकिक देह ने आपणे तेमना जीवनना गंगासागर ना प्रसंगथी समझी शकीये छीए. ज्थारे गंगासागर ना संगम उपर श्रीठाकोरजीए आपने निजधाममां पधारवानी आज्ञा करी त्यारे आपे ते मानी नहीं. लौकिक देहनो त्याग थई शके परंतु अलौकिक देह नो न थई शके. तेथीज आपश्री श्रीठाकोरजीनी आज्ञा मानी स्वधाम पधार्या नहीं. ज्यारे त्रीजीवार भगवाने आज्ञा करी त्यारे आप जगतना कार्यने आटोपी लईने आ लौकिक देहनो त्याग करीने अलौकिक देह थी पोते निजधाम पधारी गया.

आम आपे भूतल पर प्रकट थवा मनुष्य जेवो भौतिक देह धारण कर्यो छे, परंतु वास्तवमां अपनी भितर अलौकिक श्रीअंग बिराजे छे, ते कहेवानुं श्रीगुसांईजी नुं तात्पर्य छे.

आ नाम आपनो "ज्ञान" धर्म बतावे छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठ्ठल वाणी" (४०)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (२४)

****

श्रीगगसांईजी श्रीमहाप्रभुजीनुं चोविसमुं नाम "हितकृत्सताम्" बतावे छे. तेनुं तात्पर्य छे के श्रीमहाप्रभूजी सत्पुरुषोनुं हित करनारा छे. 'सत्पुरुषोथी आपनुं तात्पर्य भगवान ने शरणे रहेनार भक्त अर्थात् भगवदीय थी छे. आपश्री भक्ति मां आवतां प्रतिबंधो दूर करी भक्तने तेमना ईष्टनी प्राप्ति करावे छे, तदर्थ तेमनुं हित विचारनारा छे.

आना अनेक प्रमाण तेमना जीवन चरित्रना प्रसंगोमां प्राप्त थाय छे.

एक समये मथुरामां विश्रामघाट उपर ते समयना सुलताने एक एवुं य्ंत्र मुकावेलुं हतुं के यमुना स्नान करवा जतां लोको तेनी नीचे थी पसार थाय त्यारे तेमनी चोटली उखडी जाय अने दाढी उगी जाय. आना कारणे लोकोने क्षोभ जवा लाग्यो अने तेथी यमुना स्नान करवा जवानुं बंध थयु. ज्यारे श्रीमहाप्रभुजीए आ जाण्यु त्यारे आपश्री विश्रामघाटे पधारी यमुनाजी मां स्नान कर्युं, परंतु आपने य्त्रनो कोई प्रभाव पड्यो नहीं. तेरी लोको आनंदित थया. लोको नी विनंती थी आपश्रीए एक एवुंज यंत्र सिद्ध करी सुलताननी राजधानीना दरवाजे लगडाव्यु जेथी तेनी नीचे थी पसार थनार नी दाढी कपाई जई माथे चोटली उगी जती. तेना प्रभावथी सुलताने विश्रामघाटना यंत्रने दूत कराव्यु हतुं.

आवुं ज बीजु दृष्टांत माधवदासनुं छे. तें जगन्नाथ जी पासे पीपीरी गामे रहेता हतां. तेमनी आसक्ति एक पीर मां हती. परंतु माधवदास सत्पुरुष हतां तेथी श्रीमहाप्रभुजी तेनुं हित करवा सामे चाली तेमना घेर पधार्या अने ये पीर, जे भूतना रुपमाऔं आवी बधुं खाई जता, तेने भस्म करी माधवदास ने आपे शरणे लीधा हतां.

पोताना सेवकोनुं हित विचारनारा होई श्रीमहाप्रभूजी पोताना सेवकों ने अलौकिक सामर्थ्यनुं दान करी

तेमना द्वारा अन्य अनेक नुं पण हित कराव्यु छे. तेना घणां उदाहरण मले छे. आपे प्रभुदास जलोटा द्वारा अहिरणीने मुक्ति अपावेली, गदाधरदासे माधवदास ने भक्ति आपेली, बुलामिश्रे ऋतुधर्म वटावी चुकेल क्षत्रियनी स्त्रीने पुत्रनुं दान करेल, माधव भट्ट काश्मिरी द्वारा एक धनिकना मृतपुत्रने संजीवन करेलो, वगेरे अनेक प्रसंगों छे, जेमां श्रीमहाप्रभुजीनुं हितकृत्सतां चरित्र स्पष्ट देखाय छे.

आ नाम अपना "वैराग्य धर्म" नुं सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (४१)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र" _ नाम (२५)

****

श्रीमहाप्रभुजीनु श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां पचीसमुं नाम श्रीगुसांईजीए "जनशिक्षाकृते कृष्णभक्तिकृत्" बताव्युं छे. 'आचार्य' नुं लक्षण छे - 'पोताना सिद्धांतो नुं आचरण स्वयं करी शिष्यों पासे तेनुं आचरण करावे'. श्रीमहाप्रभुजी आवा आदर्श लक्षणवाला आचार्य - गुरु छे.

निज सेवकोने 'कृष्णभक्ति' नी साधना नी रीत बताववा माटे श्रीमहाप्रभुजी पोते कृष्णभक्ति करी छे, कारण भक्ति विना जीवनो उद्धार थई शके नहीं. माटे आपश्रीए स्वयं आचरण करीने पछी पोताना सेवकोने तदनुसार कृष्ण सेवा नो उपदेश आप्यो छे. तदर्थ ज तेओ 'सिद्धांतमुक्तावली' ग्रंथमां कहे छे के "कृष्ण सेवा सदा कार्या" मारो सिद्धांत छे.

भक्त गोपालदासजीए वल्लभाख्यान मां गायुं छे - "आप सेवा करी शिखवे श्रीहरि, भक्तिपक्ष वैभव सुदृढ कीधो". आपश्रीना आ नामनी यथार्थतानुं प्रमाण छे.

श्रीवल्लभ स्वयं कृष्ण स्वरुप होवा छतां (वस्तुत: कृष्ण एव - वल्लभाष्टकम्), निज भक्तोना कल्याण माटे पोते श्रीकृष्ण नी सेवा करी छे, अने तेमने प्रेमलक्षणा भक्तिमार्गनी रीत समजावी छे. तेमणे करेली भारत परिक्रमा दरम्यान पोते श्रीमुकुंदरायजीने साथे पधरावी तेमनी सेवा स्वय़ं करी छे.

दामोदरदास संमरवालानी वार्ताथी ज्ञात थाय छे के श्रीमहाप्रभुजी स्वयं मेमना धरे बिराजी श्रीद्वारिकाधीश प्रभुनी वैभव युक्त सेवानी पद्धति तेमने शिखवाडी हती, तमेज राग-भोग-श्रृंगारनी रीत समजावी हती.

श्रीमहाप्रभुजीनुं आ "जनशिक्षाकृते कृष्णभक्तिकृत" नाम तेमना 'धर्मी स्वरुप' नो निर्देश करे छे.
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (४२)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (२६)

****

श्रीमहाप्रभुजीनुं छव्वीसमु नाम श्रीगुसांईजीए "निखिलेष्टदः" आप्युं छे. तेमां त्रण शब्दो छे _ निखिल + ईष्ट + दः, अर्थात् 'ईच्छेलुं सर्व आपनार'. श्रीमहाप्रभुजी पोताना सेवकोना बधा मनोरथो पूर्ण करनारा छे एटले के तेमणे ईच्छेलुं आपवा वाला छे.

भक्तोनुं इष्ट श्रीठाकोरजी छे, तेथी श्रीठाकोरजी नुं दान आपश्री करे छे. श्रीमहाप्रभुजी प्रत्येक सेवकने शरणे लीधा पछी सेवा द्वारा निखिल इष्ट अर्थात् लौकिक - अलौकिक भगवत्संबधी नाना मां नानी वात थी लई सदेह नित्य-लीला प्राप्ति करावता हता.

पुष्टिमार्गमां भगवद् सेवा ज मुख्य छे. तदर्थ श्रीमहाप्रभुजी सेवकों ने माथे भगवद् स्वरुप पधरावी जाते प्रेमपूर्वक सेवानी रीत शिखवता हतां. ते रीते आपे पोताना सेवकों ने प्रभुनी प्राप्ति करावी तेमना सानुभव द्वारा अनीर्वचनिय सुखनी प्राप्ति नुं दान कर्युं हतुं.

पोते स्वयं भगवदावतार होवा छतां पोतानुं मुख्य स्वरुप छुपावी एक सेवकनी जेम श्रीगोवर्धननाथजीनी स्नेहपूर्वक सेवा करी सेवामार्गनो प्रचार अने प्रसार कर्यो, जेथी सेवकों ने दृढ़ता विश्वास बेसे.

ज्यारे दामोदरदास संमरवालाना देहत्याग पछी तेमना पत्नीए श्रीद्वारिकाधीश प्रभुने सर्व साहित्य साथे एक दासी साथे नावमां श्रीमहाप्रभुजीने त्यां पधराव्या त्यारे आपश्रीए ते दासीने सदेहे नित्य लीलानी प्राप्ति करावी हती.

आपश्रीनुं आ नाम "ऐश्वर्य धर्म" नुं सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (४३)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (२७)

****

श्रीगुसांईजीए श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां श्रीमहाप्रभुजीनुं सत्ताविशमु नाम "सर्वलक्षण संपन्न" बताव्युं छे. प्रश्न थाय के शुं अहिं मनुष्य ना - उदारता, संयम, सात्विकता जेवा सद्लक्षणो विशे कही रह्या छे ? श्रीगोकलनाथजीए खुलासों कर्यो छे के आवा मानवीय लक्षणो तो आपश्रीमां सहज होयज, परंतु आप साक्षात् भगवद् स्वरुप होवाथी आपना त्रण विशिष्ट लक्षणोनो निर्देश श्रीगुसांईजी आ नाम मां करी रह्या छे , जे छे - आपनुं 'हरिरुप', 'गुरुरुप' अने 'भक्तरुप'.

श्रीसर्वोत्तमजीमांना १०८ नाम पैकी आ त्रणेय लक्षणोनो उल्लेख श्रीगुसांईजीए "विमुक्तिदः" "यज्ञभोक्ता" आदि थी 'हरित्व',"दैवोद्धारप्रयत्नात्मा", "श्रीभागवतगूढार्थप्रकाशनपरायण", "श्रीकृष्ण ज्ञानदोःगुरुः" आदि नामोथी आपनुं 'गरुत्व' अने "जनशिक्षाकृते कृष्णभक्तिकृत" आदि नामो मां 'भक्तपणा' नो कर्यो छे.

श्रीमहाप्रभुजी भगवद् रुप होवानां कारणे तेमनांमां 'हरित्व' छे. तदर्थ आपणे तेमनी सेवा करीए छीए. आप सर्वश्रेष्ठ गुरु छे. गुरु ना जे लक्षणो नो आपे पोताना निबंध ग्रंथमां निर्देश कर्यो छे - १. कृष्ण सेवा परायण, २. दंभादि रहित, ३. श्रीभागवतना मर्मज्ञ अने ४. नर, आपनामां अक्षरसः विद्यमान छे. आपे आधिदैविक, आध्यात्मिक अने आधिभौतिक त्रणेय रुपे सेवा प्रकट करी छे.

जे जीवो 'क्रिया तत्पर' छे, तेमनो पण श्रीमहाप्रभुजीए कृपा करीने एमनामां परिवर्तन लावीने, एमना भावनुं पोषण करी उद्धार कर्यो छे, तेवा आप समर्थ गुरु छे.

आपमां 'भक्तपणा'नुं लक्षण पण आपश्रीना वचन "श्रीकृष्ण दासस्य हितं वच:" मां स्पष्ट जणाय छे. पोताने आप श्रीकृष्ण ना दास बतावे छे, तेमां आपनो भक्त होवानो निर्देश जणाय छे.

आम भक्त स्वरुप, गुरु स्वरुप अने भगवद् स्वरुप ए त्रणेय प्रकारे श्रीमहाप्रभुजी जीवोने अनुभव करावे छे, तदर्थ आ नाम "सर्वलक्षणसंपन्न:" सार्थक छे.

आप नाम अपना 'वीर्य धर्म' नुं सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (४४)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (२८)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां श्रीमहाप्रभुजीनुं अठाविशमुं नाम "श्रीकृष्णज्ञानद:" बताव्यु छे. 'श्रीकृष्ण' शब्द मां 'श्री' एटले श्रीस्वामिनीजी अने 'कृष्ण' अर्थात् श्रीठाकोरजी, बने सूचितार्थ छे. 'ज्ञानद' शब्द थी 'ज्ञान देवावाला' एवो संकेत छे. आ नाम द्वारा श्रीगुसांईजी समजावे छे के श्रीमहाप्रभुजी पोताना सेवकोने 'युगल स्वरुप' नुं ज्ञान करावनाला छे. श्रुतिवचन "रसोवैस:" अनुसार भगवान नुं स्वरुप लीला रसयुक्त श्री सहित रसात्मक छे. तेथी आपश्री नीजजनोने ते अलौकिक रसात्मक स्वरुप नुं ज्ञान आपे छे.

भगवान नी सर्वे लीलाओं रसात्मक छे, अने नित्य छे. प्रभु नित्य श्रीस्वामिनीजी सहित युगल स्वरुपे बिराजे छे. आ प्रकारनुं ज्ञान पोताना जीवोने श्रीमहाप्रभुजीनी कृपाथी थाय छे. संवत १५६७ मां आपश्री ज्यारे अडेलथी व्रजमां पधारी चस्मा हतां, त्यारे रस्तामां रुनकता गाम पासे यमुना किनारे गौघाट पर सुरदासजी श्रीमहाप्रभुजीने शरणे आव्या. तेमने सेवक बनावाया पछी आपश्रीए सुबोधिनीजीनी दशमस्कंधनी कारिका - "नमामि हृदये शेषे ...... कलानिधिम्" संभलावी. जेना कारणे सुरदासजीने भगवाना लीला विशिष्ट स्वरुपनुं ज्ञान थयुं. तेथी तेमणे तरतज गायुं - "चकइ री चलि चरन सरोवर जहां नहीं प्रेम वियोग'. आम सुरदासजीने आपे लीला रसात्मक स्वरुप नी प्रतीति करावी हती.

ज्यारे आपश्रीए सुरदासजीने भगवद्लीलानो अनुभव कराववा श्रीमद् भागवत नी दशम स्कंध अनुक्रमणिका रची संभलावी हती त्यारे तेमणे पोताना हृदयमां ते लीलाओ स्फुरित थतां नंदमहोत्सवनुं पद गायुं हतुं - "व्रज भयो महरके पूत".

तेवीज रीते श्रीमहाप्रभुजीए परमानंददास इत्यादि अन्य सेवकोने पण श्रीकृष्ण नी विशिष्ट लीलाओनुं ज्ञान आपी तेमने भगवद् साक्षात्कार कराव्यों हतो. आम भगवद् लीला संबंधी ज्ञान आपवानुं आपश्रीमां अद्भुत सामर्थ्य छे ते श्रीगुसांईजी आ नाम थी सूचवे छे.

आ नाम आपनो "यश धर्म" बतावे छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (४५)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (२९)

****

श्रीमहाप्रभुजीनु ओगणतीसमु नाम श्रीगुसाइंजीए "गुरु" बतांव्यू छे. गुरु ना त्रण प्रकारों छे. आधिभौतिक एटले लौकिक गुरु, जे विद्यादान आपे. आध्यात्मिक गुरु धर्म नु ज्ञान आपे, अने आधिदैविक गुरु भगवाननु ज्ञान आपी तेमने मेलवी आपे. श्रीमहाप्रभुजी एवा आधिदैविक गुरु छे, ते आ नामनु तात्पर्य छे.

श्रीमहाप्रभुजीए जगतमा ब्रह्मवाद नु स्थापन करी श्रीकृष्ण नी भक्ति नो मार्ग प्रगट कर्यो छे. तेमने श्रीकृष्ण ना यथार्थ स्वरूप नु जगतने ज्ञान कराव्यू छे. तेथी आप मात्र गुरु नहीं जगद-गुरु कहेवाय छे, कारणके तेमना सिद्धांतो कोई काल के देश पुरता सीमित नथी परंतु सर्वत्र अने सर्वकालमा समग्र जगत ने लागू पड़े छे.

संवत १५४७-४८ मा ओरछाना राजा रामभद्रनी सभा मा आपश्री नो घट सरस्वती साथे शास्त्रार्थ मा विजय थवाथी आपने "गुरु" पदवी थी विभुषित करी कनकाभिषेक करवामा आव्यो हतो. तेवीज रीते विद्यानगर ना कृष्णदेवराये पण ज्यारे श्रीमहाप्रभुजीए मायावाद नु खंडन करी ब्रह्मवाद स्थापित कर्यो त्यारे बीजी वार आपनो कनकाभिषेक करी राजाए "जगद गुरु" नी पदवी थी बिरदाव्या हता.

जेवीरीते कपिलभगवान सांख्य शास्त्रना उपदेश द्वारा मुक्तिनु फल आपे छे, तेम श्रीमहाप्रभुजी पुष्टिमार्ग नु फल भगवद-प्राप्ति काराववा माटे सक्षम छे, तदर्थ तेओ "गुरु" कहेवाय छे.

माटेज तेमना सेवक विष्णुदासे गायु छे- "जगदगुरु नाम श्रवण सुन्यौ देख्यौ रूप निहारी".

आपश्री नु आ नाम "श्री - धर्म" नु सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (४६)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (३०)

****

श्रीमहाप्रभुजीनु त्रीसमु नाम श्रीगुसाइंजीए "स्वानंदतुन्दिल" आप्यु छे. आ नाम मा बे शब्दो छे - "स्वानंद" अने "तुन्दिल". 'स्वानंद' नो अर्थ थाय निजानंद, आने 'तुन्दिल' शब्द नु तात्पर्य छे, जे पोताना थीज संतृष्ट होय. आ नाम नु तात्पर्य ए छे के श्रीमहाप्रभुजी पोताना ज आनंद थी परितुष्ट छे.

शास्त्रोमा जेमने "आप्तकाम" कहेवामा आव्या छे, तेमने कोइपण कामना होती नथी. श्रीमहाप्रभुजी निर्गुण भक्तिमार्गना गुरु छे. तेथी तेओ निरपेक्ष छे. तेओ आनंद प्राप्त करवा माटे के पोतानी जरुरियातो माटे कोइना पर निर्भर नथी. पोताना थीज संतुष्ट छे, तेओ अन्य नी आशा राखता नथी.

तेमना सेवक नारणदास नगरठठ्ठा वाला नी वात मा आवे छे के तेमना पिताए श्रीमहाप्रभुजीने एक

हजार रुपया भेट कर्या हता, परंतु तेमणे ते लेवानो अस्वीकार करी दीधो हतो. तेमनी दृष्टि क्यारेय द्रव्य मा रही न हती. विद्यानगर मां कृष्णदेवराय द्वारा कनकाभिषेक कराता पण तेमणे पोते सोनाना पात्रो नो स्वीकार न करता बधु सोनु त्यां हाजर ब्राह्मणों ने अपावी दीधु हतु, एवो त्याग अने निस्पृहपता बतावी हती. आम आपश्री ए द्रव्य ने ठोकर मार्या ना अनेक उदाहरण आपना जीवन चरित्र मां मले छे.

आपश्रीने कोईपण प्रलोभन लोभावी शकतु नथी. वर्तमान मां पण तेमनी बैठकजीओ मां भावपूर्वक तेमनी ज़ारीजी नी जलनी सेवा करनार पर आप कृपा करे छे, ज्यारे कोई केटलो पण वैभवपूर्वक मनोरथ आदि करे के धन ना मद थी कोई उपक्रम करे तो तेमने प्रसन्न करी शकाता नथी , जेम भगवाने पण दुर्योधन ना मेवा त्यागी विदुरजीनि भाजी आरोगी हती.

आपश्री नु आ नाम आपना "ज्ञान धर्म" नु सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (४७)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (३१)

****

श्रीसर्वोत्तमजीमां श्रीमहाप्रभुजीनु एकत्रीसमु नाम श्रीगुसाइंजीए "पद्मदलायतविलोचन:" कह्यु छे. आमा त्रण शब्दो छे - 'पद्मदल', जेनो अर्थ छे, कमल नी पांखडी जेवा ; 'आयत' एट्ले विशाल ; अने 'विलोचन' एटले विशेष प्रकार ना नेत्रो. श्रीमहाप्रभुजीना नेत्रो कमल नी पांखड़ी जेवा विशाल अने प्रफुल्लित, अनुराग वाळाछे.

श्रीमहाप्रभुजीना नेत्रो मा विशालता छे, विलक्षणता अने विशिष्टता छे. आपश्रीना ह्रदयमां जे आनंद विराजे छे, तेनो अनुभव आपना विशाल कमल पत्र जेवा नेत्रो द्वारा थाय छे. तेमनी कृपा दृष्टि तेमनी विशेषता छे. जेनी सामे आपनी दृष्टि पड़े तेने आप कृपारस थी भीजवी देवानी क्षमता धरावे छे. तेमनी सन्मुख जनार ने शीतलता नो अनुभव थाय छे. जो ह्रदयमा क्रोध होय तो तेनी असर नेत्रोनी लालाश तथा भयानकता थी वरताय छे. परंतु श्रीमहाप्रभुजी ना दर्शन इरवाथी शान्ति अने प्रफुल्लितता अनुभवाय छे.

'लोचन' शब्द थी खेंचांण थाय एवो संकेत छे. जीव ज्यारे आपश्रीनी सन्निधि मा जाय छे, त्यारे लोहचुम्बक नी माफक आपना तरफ सहज खेंचाण थाय छे. एटलेके श्रीमहाप्रभुजी पोतांना जीवोने कोइक लीला द्वारा पोतानी तरफ खेंचे छे, एवु तात्पर्य छे.

श्रीनाथजीनी आज्ञाथी ज्यारे श्रीमहाप्रभुजी तेमने मलवा श्रीगिरिराजजी उपर पधार्या त्यारे 'प्रथम मिलन' वखते आपना नेत्रोमां जे प्रफुल्लितता अने अनुराग प्रकट थयो हतो ते अनिर्वचनीय हतो.

तदर्थ आपनु आ "पद्मदलायतविलोचन:" नाम सार्थक छे. आ नाम आपना 'वैराग्य धर्म' नु सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (४८)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (३२)

****

श्रीगुसाइंजीए सर्वोत्तमजी मां बत्रिसमु नाम कह्यु छे - "कृपाद्रगवृष्टि संहृष्ट दासदासी प्रियः". अर्थात, श्रीमहाप्रभुजी पोताना नेत्रो वड़े कृपानी वृष्टि करीने पोताना दास- दासीने प्रसन्न करे छे अने तेना द्वारा एमने प्रिय बने छे. अही 'कृपा नी दृष्टि' थी तात्पर्य छे, 'आनंद नी वृष्टि'. आपश्रीना नेत्रोमांथी सदा आनंद ज वरसे छे, जेनाथी तेमना सेवको हमेशा भिजाय छे.

श्रीमहाप्रभुजी ना अनेक एवा सेवको हता जे तेमने अति प्रिय कही शकाय, जेवाके - दामोदरदास हरसानीजी, कृष्णदास मेघन, शेठ पुरुषोत्तमदास, सूरदासजी, कुम्भनदासजी, रजोबाई क्षत्राणी वगेरे अनेक नामो छे, जेमना ऊपर आपश्री नी विशेष कृपा हती.

एक समये ज्यारे श्रीमहाप्रभुजी श्रीगिरीराजजिनी तरहटीमां दामोदरदासजी नी गोद मां मस्तक राखी पोढी रह्या हता त्यारे त्यां श्रीनाथजी पधार्या. तेमना नूपुर ना अवाज थी आपश्री नी निंद्रा माँ खलेल पड़े तेम जाणी हरसानीजीए हाथना संकेत थी श्रीनाथजीने रोक्या. आ प्रसंग मां दासनूं पोतांना गुरु प्रत्ये प्रियत्व प्रदर्शित थाय छे, कारणके तेमना सुख माटे तेमणे श्रीठाकोरजीने पण उभा राखी दीधा !.

आवो ज प्रसंग रजोबाई क्षत्राणि नो छे. श्रीमहाप्रभुजीए तेमनी पासे थी पिता ना श्राद्ध माटे घी मंगावेलु, जे आपवानो रजोबाईए इन्कार करी दिधेलो. सांजे ज्यारे नियम मुजब तेओ श्रीमहाप्रभजीने सामग्री अरोगाववा गया त्यारे पहेलां तो आपश्री ए नाराजगी व्यक्त करी, परंतु ज्यारे रजोबाई ए सैध्दांतिक खुलासो कर्यो त्यांरे आपश्री अति प्रसन्न थया अने प्रीति पूर्वक आरोग्या .

आवा अनेक सेवको ना प्रसंगों प्राप्त थाय छे जे आपश्री नी निज सेवको प्रत्ये नी अपूर्व प्रीति नो संकेत आपे छे, अने तेमनो आचार्यश्रीमा स्नेह नी प्रतीति करावे छे.

आ नाम श्रीमहाप्रभुजीने 'धर्मी स्वरूप' ने सूचित करे छे. (डॉ.जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (४९)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (३३)

****

श्रीमहाप्रभुजीनु तेत्रिस मु नाम श्रीगुसाइंजीए "पतिः" बताव्यू छे. संस्कृत मा 'पति' शब्द नी व्याख्या आपवामां आवी छे - "पातु: इति पतिः", जे रक्षण करे तेने 'पति' कहेवाय. लौकिक मां पति पोतानु रक्षण करे छे तेमज पोतानी पत्नी नुं पण रक्षण करे छे. तेवीज रीते श्रीमहाप्रभुजी पुष्टिजीवोना अलैकिक स्वामी छे, तेओ पोते तो निर्भय छे अने पोताने शरणे आवेला जीवोने पण निर्भय बनावे छे.

श्रीमहाप्रभुजी जेमने शरणे ले छे, तेमने पोताना प्रिय बनावे छे, अने तेनु रक्षण करे छे. जेमना

पर आपश्री कृपा करे छे, तेने अभय प्रदान करे छे. आनुं प्रमाण तेमना सेवक कृष्णदास मेघन ना जीवनमा जोवा मले छे. ज्यारे तेओ हिमालय ना पर्वतो वच्चे थी पसार थता हता त्यांरे तेमणे भारी शिला ने गबड़ी आवती जोई. पोतांना स्वामी श्रीमहाप्रभुजी साथे चाली रह्या हता तेथी तेमने ईजा न थाय माटे तेमणे पोतानी परवा कर्या विना एक हाथथी शिला रोकी दीधी, कारणके पोतांना स्वामी साथे होवाना कारणे तेओ निर्भय हता.

आवो ज बीजो प्रसंग 'गंगासागर' नो छे. एक रात्रे ज्यारे श्रीमहाप्रभुजीए मुरमुरा आरोगवानी ईच्छा करेली त्यांरे पोतानी परवा कर्या विना अंधारी रात्रे गंगासागर पार करीने मुरमुरा लइ आव्या हता, केमके तेमना स्वामी तेमनु रक्षण करशे ज तेम तेओ निश्चिन्त हता.

श्रीमहाप्रभुजी ना सेवकोने काल नो भय होतो नथी, के मृत्यु नो पण डर होतो नथी. तेवी कोई प्रकार नी चिंता तेमने सतावती होती नथी, कारणके साक्षात भगवदावतार पति थी तेओ सदा रक्षित होवानो अनुभव करे छे.

साबरकांठा ना चोयला गाम ना पोतांना सेवक एक ब्राह्मण कृष्णदास नी पत्नी माटी खोदवा गई हती त्यांरे अचानक भेखड़ तूटी पड़ता ते माटी मा दटाइने मृत्यु पामी. त्यारे तलाव ना कांठे संध्यावंदन करतां श्रीमहाप्रभुजीए तेने माटीना ढगला मां थी बहार कढावी वेद मंत्रो द्वारा जल छांटी तेने सजीवन करी हती. आम श्रीमहाप्रभुजीए अलौकिक स्वामी - पति तरीके अनेक जीवनी रक्षा कर्या ना प्रमाण तेमना "पति" नाम ने सार्थक करे छे.

आ नाम तेमना "ऐश्वर्य धर्म" ने सूचित करे छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (५०)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (३४)

****

श्रीगुसाइंजी श्रीमहाप्रभुजीनु चोत्रिसमु नाम श्रीसर्वोत्तमजी मा बतावे छे - "रोषद्रकपाटसम्प्लुष्ट भक्ताद्विट". आ नाम नो अर्थ छे - श्रीमहाप्रभुजी आपनी रोषयुक्त दृष्टीथी भक्तना द्वेषियो ने बाळवावाळा छे. जेओ पोतांना भक्तो ना द्वेषी होय तेमने आपश्री सांखी सकता नथी अने तेना पर पोतानो रोष व्यक्त कर्यो होय तेवा प्रमाण तेमना जीवन प्रसंगों मा मले छे.

रामानंद पंडित नो प्रसंग प्रचलित छे. तेमना मनमां वैष्णवों प्रत्ये दुर्भाव आवतां श्रीमहाप्रभुजीए तेनो तत्क्षण त्याग करी दीधो हतो.

तेवोज एक जाणीतो प्रसंग तेमना सेवक प्रभुदास भाट नो छे. एक कीरत चौधरी नाम नो सख्स वैष्णवों नो द्वेषी हतो. तेथी ते श्रीमहाप्रभुजिना सेवक प्रभुदास नो द्वेष करतो अने तेमने हैरान-परेशान करतो हतो. तेम छतां प्रभुदास तेने काई कहेता नहीं, अने सहन करतां. श्रीमहाप्रभजी भक्तनी परेशानी सहनं न करी शक्या. तेमणे एवी लीला करी के एक दिवस विष्णुदूतो ए रात्रे ते कीरत चौधरी सुतो हतो त्यांरे त्यां जइने मगदल थी तेने झुडवा मांडयो. पेलाए पुछ्यु के मने शा माटे मारी रह्या छो, मैं शुं बगाड्यू छे, परंतु

तेने जवाब आप्या विना बराबर धोलाई कर्या पछी कह्यु के तुं शा माटे प्रभुदास ने हैरान करे छे ?. त्यांरे तेनी सान ठेकाणे आवी अने ते दिवस थी कीरत चौधरी ए वैष्णवोनो द्वेष करवानु अने तेमने हैरान करवानु छोड़ी दीधु.

तेवीज रीते तेमना सेवक त्रिपुरदास ना विरोधी तुर्क ने पण आपश्री ए विष्णुदुतो द्वारा शिक्षा करी हती.

श्रीमहाप्रभुजी आवा भक्तवत्सल हता तेवु तेमनु दिव्य चरित्र प्रतिपादित करवानु श्रीगुसाइंजी नु आपश्री ने "रोषद्रकपातसम्प्लुष्ट भक्तद्विट" द्वारा हेतु रहेलो छे.

आ नाम आपना " वीर्य धर्म" नु सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (५१)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (३५)

****

श्रीगुसाइंजी श्रीमहाप्रभुजीनु पांत्रिसमु नाम श्रीसर्वोत्तमजी मा बतावे छे - "भक्तसेवित:". आ नाम थी श्रीगुसाइंजी समजावे छे के श्रीमहाप्रभुजी पोताना भक्तो ने मात्र प्रिय ज नथी परंतु आपश्री भक्तो द्वारा निरन्तर सेवित पण छे. तेओ पोतांना भक्तोने सर्व प्रकार ना भय मां थी मुक्त करवावाळा छे, तेथी तेमना स्वकीय भक्तो तेमनी हर्षपूर्वक सेवा करे छे.

श्रीमहाप्रभुजीना सेवक महावन ना एक क्षत्राणी ने आपश्री नी सेवा नो मनोरथ थयो जे तेणीए आपश्री ने जणाव्यों, त्यांरे श्रीमहाप्रभुजीए एक वस्त्र पर पोतांना चरणारविन्द छापी ने तेने पधारावी दीधा अने तेनी सेवा करवानी आज्ञा करी. ते क्षत्राणिए ते चरणारविन्द नी छापवाळा वस्त्र पोताने घेर पधारावी ने तेनी भगवत स्वरूपवत भावपूर्वक निष्ठाथी सेवा करवा लागी. ते श्रीठाकोरजी नी सेवा ने साधन रूप सेवा मानती ज्यारे साक्षात श्रीमहाप्रभुजिनी सेवा ने फल रूप मानती हती. तेथी श्रीआचार्यजी पण तेने फलात्मक अनुभव करावता हतां. आ रीते श्रीमहाप्रभुजी भक्तो ना सेव्य स्वरूप पण हतां, तेवो निर्देश श्रीगुसांइंजी आ नाम थी आपे छे.

श्रीमहाप्रभुजी सुबोधिनिजी मां सेवानी व्याख्या बतावे छे जे "सेव्य संतिष जनिका" होय. सेव्य ने पूर्ण संतोष थाय तेने सेवा कहेवाय. भागवद सेवा श्रीठाकोरजी ने सुख-संतोष आपे तेवी रीते करवी जोइए, तेम गुरुसेवा पण आपश्री ने संतोषजनिका होवी जोइए. तेथी तेमना बैठकजी मा ज्यारे जल नी झारी भरिये त्यांरे शांतिपूर्ण रीते झारीजी पधाराववा जोइए. बैठकजी मा श्रीमहाप्रभुजी प्रत्यक्ष बिराजे छे, तेथी त्यां जइ प्रेमपूर्वक तेमनी सेवा करवी जोइए.

श्रीमहाप्रभुजी नुं आ नाम "भजतसेवित:" तेमना "यश धर्म" नुं सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (५२)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (३६)

****

श्रीमहाप्रभुजीनुं छत्रीसमु नाम श्रीगुसांईजीए "सुखसेव्य:" आप्युं छे. तेनो अर्थ थाय के श्रीमहाप्रभुजी सुखपूर्वक सेवा करी शकाय तेवां छे. भक्तो अनेक प्रकार ना होय छे. दरेक भक्त नो भाव अलग अलग होय छे. तेम छतां जे भक्त जे भाव थी श्रीमदाचार्यचरण नी सेवा करवा नी इच्छा राखे छे, ते सर्व भावो भक्तो ना पूर्ण थाय छे. माटे श्रीगुसाइंजी आपने "सुख सेव्य:" कहे छे.

आ नाम नुं तात्पर्य बतावतां कहे छे के गुरु सेवा अने गोविन्द सेवा बाबत मा सेवक ने आनंद प्राप्त थवो जोइए. तेथी ज श्रीमहाप्रभुजी स्वयं कहे छे - " सेवायां स्नेह एव नियामक:". सेवक साथे सेव्य नो संबंध पण स्नेहपूर्ण होय छे. सेव्य पण सेवक ने एटलोज स्नेह करे छे. तदर्थ श्रीमहाप्रभुजी नो स्नेह पण पोताना सेवक माटे विद्यमान होय छे, ते अनेक वार्ता प्रसंगों मा जोई शकाय छे.

आपश्रीना सेवक मोरबी ना बादरायणदास अने तेमना पत्नी आपश्री द्वारका बिराजता हता ते दरम्यान तेर मास सुधी आपनी पासे रहया हता अने ते बन्ने नी इच्छा अनुसार तेमणे जल भरवानी, रसोई नी परचारगी नी तथा आपश्रीना वस्त्र धोवानी सेवा प्रेमपूर्वक करी हती, जे माटे आपश्री ए प्रसन्नता व्यक्त करी हती.

श्रीमहाप्रभुजीए यादवेंद्रदास कुम्भार जेवा बलिष्ठ सेवक नी शारीरिक सेवा पण प्रसन्नतापूर्वक स्वीकारी हती, तेम सूरदासजी, परमानंददासजी इत्यादि भक्तो नी कीर्तन नी सेवा पण अंगीकार करी हती. अर्थात आपश्री जे सेवक नी जे प्रकारे सेवा करवानी इच्छा होय तदनुसार तेमनी सेवा प्रेमपूर्वक अंगीकार करे छे. जे स्वामी जबर्दस्ती सेवक पासे सेवा करावे ते स्वामी 'सुखसेव्य' न कहेवाय. "परंतु श्रीमहाप्रभुजी तेथी विलक्षण छे, ते बताववानु अही तात्पर्य छे.

आ नाम आपश्री ना "श्री धर्म" नु सूचक छे. (डॉ.जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (५३)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (३७)

****

श्रीगुसांईजीए श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां श्रीमहाप्रभुजीनुं साडत्रीशमु नाम "दुराराध्य:" बताव्यू छे. आगल नुं नाम "सुख सेव्य:" हतुं. श्रीगुसाइंजी कहे छे के श्रीमहाप्रभुजी पोताना सेवको माटे तो सुखरूप सेवा करी शकाय तेवां छे, परंतु जे जीवो तेमना शरणे आवेला नथी, तेवाओ माटे आप "दुराराध्य" छे. आपश्री नी आराधना अर्थात सेवा तेमज स्मरण दुष्कर छे.

आपश्री नी सेवा करवामा तेमना सेवको ने वास्तविक सुख नो अनुभव थाय छे, ज्यारे अन्यमार्गीयो तेमनु स्नेहात्मक स्वरूप जाणता न होवा ना कारणे मात्र आत्मसंतोष सिवाय तेओ बीजु कांई प्राप्त करी

शकता नथी, केमके पोतांना सेवक सिवाय आप बीजानी सेवा अंगीकार करता नथी.

वार्ता साहित्यमां आना प्रमाण मले छे. एक समये श्रीमहाप्रभुजी जगन्नाथजी थी पाछा फरता रस्ता मां पीपरी गाममा तलावनी पाल पर बिराजता हतां. ते गाम मा एक गंगापुत्र सुन्दरदास नामे सद्‌गृहस्थ रहेता हता, जेओ गाममा कोई संत महात्मा आवे तेनी चरण सेवा हमेशा करता. श्रीमहाप्रभुजी ने पधारेला जाणी, तेओ कोई महापुरुष छे तेम समजी तेमनी चरण सेवा करवा माटे आव्या, परंतु आपश्री ना सेवक कृष्णदास मेघने तेमने आपश्रीना चरण ने अडकवानी नी ना पाडी दीधी अने खुलासो कर्यो के आपश्री मात्र पोताना सेवको पासेज सेवा करावे छे, अन्यने तो स्पर्श पण करवा देता नथी.

एवो ज प्रसंग चित्रकार होनहार नो छे. बादशाह सिकंदर लोदी श्रीमहाप्रभुजी थी प्रभावित हतो, तेथी तेणे पोताना चित्रकार होनहार ने आपनु चित्र बनाववा मोकल्यो, परंतु अथाग परिश्रम करी ने पण ते तेमनु चित्र बनावी शक्यो नहीं. छेवटे तेने थाकी ने आपने पोतानु चित्र दोरवा देवा माटे दैन्यर्भाव थी आपश्री ने विनंती करी त्यांरे आपे पोतानु स्वरूप तेना हृदय मां स्थापित कर्यु त्यांरे होनहार आपश्री नु चित्र अंकित करी शक्यो हतो.

आथी समजी शकाय छे के श्रीमहाप्रभुजी स्वयं जेना पर कृपा करे अथवा पोताने शरणे आवे तेने ज सहज प्राप्य हता, अन्य ने माटे "दुराराध्य" हतां.

आपश्री नु आ नाम आपना "ज्ञान धर्म" नु सूचक छे. (डॉ.जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (५४)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (३८)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां श्रीमहाप्रभुजीनुं आडत्रीशमुं नाम श्रीगुसांइजीए "दुर्लभाघ्रिसरोरुह:" बताव्यु छे. आ नाम मां त्रण शब्द छे. "दुर्लभ + अंघ्रि + सरोरुह". अर्थात 'जिनके चरणकमल दुर्लभ' छे. श्रीमहाप्रभुजी ना चरण नी प्राप्ति तेमना भक्तोने पण अत्यन्त कष्ट थी प्राप्त थाय छे, कारण के ते भक्तो इस हृदय मा अत्यन्त आर्ति, ताप उद्‌भवे त्यारेज प्राप्त थई शके छे, केमके आपनु स्वरूप तापात्मक छे.

ज्यां सुधी श्रीमहाप्रभुजी अने भगवत स्वरूप नी अभिन्नतानु ज्ञान न थाय त्ये सुधी आपश्रीना चरण नी प्राप्ति दुर्लभ छे. रातदिवस पंचाक्षर मंत्र ना गूढ भाव नुं चिंतन कृष्ण ना विराहानल द्‌वारा मनने तपावी नेे अलौकिक न बनावे त्यां सुधी आपना चरणकमल ना लिलारस नो प्रादुर्भाव थतो नथी.

आपश्रीना जीवन चरित्र मा प्रसंग मले छे के श्री बिल्वमंगलजी श्रीविष्णुस्वामीनी आज्ञा थी श्रीमहाप्रभुजीना दर्शनननी प्रतीक्षा मां सातसो वर्ष सुधी योग धारण करीने वृंदावन मा रह्या हता. ज्यारे आपश्री विद्यानगर पधार्या त्यांरे त्यां विजय प्राप्त थया पछी तेओ ए विष्णुस्वामी ना अभिप्राय ने आपनी समक्ष रजु करी तेमना संप्रदाय ने प्रवर्तित करवा तेमनी अंतिम इच्छा जणावी हती अने तेमना आचार्यपद नु तिलक कर्यु हतु.

आ प्रकारे बिल्वमंगलाचार्ये श्रीमहाप्रभुजी ना स्वरूप नुं ज्ञान प्राप्त करी आपश्री ने श्रीविष्णुस्वामी

संप्रदाय नु आचार्य तिलक कर्यु, परंतु अन्य विद्वानोंने आपश्री द्वारा पराजित थवा छतां आपना स्वरूप नु ज्ञान थयु न हतु.

तेथी ज परमानंद दासजी गाय छे - "चरनकमल अब ही प्राप्त भये बहुत दिनन आराधे", अर्थात आपश्री ना चरणकमल दुर्लभ छे.

आ नाम आपना "वैराग्य धर्म" नु सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (५५)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (३९)

****

श्रीमहाप्रभुजीनु ओगणचालीसमु नाम श्रीगुसाइंजीए "उग्रप्रताप:" बतांव्यू छे. श्रीमहाप्रभुजी नो प्रताप एटलो तेजोमय छे के आपनी सामे कोई उभु रही शकतु नथी एम श्रीगुसाइंजी नु तात्पर्य छे. तेना कारणे पुष्टिजीव सिवाय कोई ने आपश्री ना चरणकमल नी प्राप्ति थई शकती नथी. आपश्री नी उपस्थिति मा अन्य सर्वे तेज शांत थई जाय छे. एवो तीव्र आपनो महिमा छे.

श्रीमहाप्रभुजी भक्तिमार्ग रूपी कमल ने विकसित करवावाला सूर्य सामान छे. अतः जे भक्तिमार्गीय दैवी जीव छे, तेमने तो अलौकिक आनंद प्रदान करवा वाला छे, परंतु जनसाधारण ने अने विशेषतः भक्तद्रोहिजनोने माटे आप भय उपजावे तेवां छे. भक्त-विरोधी अथवा शास्त्र विरोधी लोको आपनी समक्ष टकी सकता नथी.

कृष्णदेवराय नी सभामा मायावादीओ ना विजय पछी कोइनी साथे शास्त्रार्थ माटे कोईने प्रवेश आपवानी मनाई करी दीधी होवा छतां ज्यारे द्वारपाले श्रीमहाप्रभुजी ना पधारवानी सूचना राजा ने आपी त्यांरे राजाए स्वयं आवी आपश्री नुं स्वागत करी सभा मा पधरावी गयो. आपश्री ना तेज आगळ ते नतमस्तक थयो एटलूज नहीं पुनः शास्तार्थ थतां आपना तीव्र प्रताप ने कारणे प्रतिपक्ष ने निरुत्तर थइने पराजय स्वीकारवो पड्यो.

आपश्रीना जीवनचरित्र मां पालमकोट ना राजा नो प्रसंग छे. राजा ए कालनिवारण माटे पुरोहितने कालपुरुष नी एक सुवर्ण नी मूर्ति दानमां आपी. पुरोहित ते लेवा गयो त्यांरे कालमूर्तिए एक आंगळी ऊंची करी, जेथी ते डरी गयो. विजयनगर मा आपश्री ना विजय पछी आपना थी प्रभावित थई ते पुरोहित आपश्री ना शरणे आव्यो. तेणे आपश्री ने बनेली घटना कही त्यांरे आपे एक ब्राह्मण वैष्णव ने गायत्री ना उपदेश थी प्रज्वलित अग्नि समान तेजस्वी बनावी पुरोहित साथे मोकल्यो. त्यारपछी पुरोहिते कालपुरुष नु दान लीधु तो राजा सारो थई गयो. आम परोक्षमा रहीने श्रीमहाप्रभुजीए काल ने शांत कर्यो, तेवो आपनो उग्र प्रताप छे.

आ नाम आपना 'धर्मी स्वरूप" नु सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (५६)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (४०)

****

श्रीमहाप्रभुजीनु चालीसमु नाम श्रीगुसाइंजीए "वाक्सीधुपूरिताशेषसेवक:" आप्यु छे. आ नाम पांच शब्दो नुं बनेलूं छे. वाक् + सीधु + पूरित + अशेष + सेवक. अर्थात वचन रुपी अमृत, वचनामृत द्वारा परिपूर्ण, पूर्णतया, अशेष सेवक एटले सर्वे भक्तजनो ने तृप्त करवा वाळा छे.

श्रीमदाचार्यचरण पोतांना समस्त सेवको ने प्रतिदिन वचनामृतो द्वारा कृष्ण रस थी तरबोळ करवा वाळा छे. ते भगवद रस ना कारणे सेवको मां भगवद धर्म प्रवेशे छे. निज सेवकों मां श्रीकृष्ण मिलन नी लालसा सदा विद्यमान रहे छे, जेनी पूर्ति अन्य कशा थी नहीं, मात्र कृष्ण कथा रस थीज थई शके छे. श्रीमहाप्रभुजी एवा भक्तोना आनंददाता छे.

आपश्री प्रतिदिन मध्यानकालमां श्रीभागवत ना दशम स्कन्ध नी श्रीकृष्ण नी रहस्यलीला नुं वर्णन सेवको आगळ करता हतां, जे वचनामृतोनु श्रवण करी सेवकोना सर्व तापो नी निवृत्ति थई जती हती. तेमनी भीतर तेमज बाहरी इंद्रियों भगवद रस पामी तृप्त थई जती.

ज्यारे आपश्री द्वारका बिराजता हता त्यांरे नित्य श्रीमद्भागवत नी कथा कहेता हता, ते समये श्रोतावर्ग मां दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, गोविन्द दुबे, राणा व्यास, रामदास वगेरे अनेक भाविक सेवको आवता. ए बधा सेवको आपश्रीनी वचनसुधा नुं पान करी रस प्लावित थई जता हता. एक समये कथा दरम्यान आकाश मां वादळो घेराई आव्या अने वरसाद पडवो शरू थई गयो. त्यांरे आपश्रीए विचार्यु के वरसाद ना कारणे श्रोताओं जवा लागशे अने तेमना हृदयमा उमगेला भगवद रस थी तेओ वंचित रही जशे. तेथी आपे पोताना प्रतापबल थी वरसाद ने रोकी दीधो. आम श्रीमहाप्रभुजी नी उग्रता नो ताप अन्योने अवरोधे छे, तेम भक्तोना प्रतिबंधों ने पण दुर करे छे.

आ नाम आपश्री ना "ऐश्वर्य धर्म" नुं सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (५७)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (४१)

****

श्रीसर्वोत्तमजीमां श्रीमहाप्रभुजीनु एकतासलीसमु नाम श्रीगुसाइंजीए "श्रीभागवत पीयुष समुद्र मथन क्षमः" आप्यु छे. श्रीगुसाइंजी समजावे छे के श्रीमहाप्रभुजी अमृत ना समुद्र रूप श्री भागवत नुं मंथन कारावावा मा समर्थ छे.

श्रीमद भागवत 'महापुराण' कहेवाय छे, कारणके ते अढार पुराणो ना शिरमोर सम छे. ते भगवद नामात्मक रूप सर्वश्रेष्ठ पुराण छे. तेमां भगवान नी दशविध लीलाओ नु वर्णन वेदव्यासजीए करेलु छे. आ

एक अति गूढ भगवद शास्त्र छे.

श्री महाप्रभुजीए भागवतजी नु मंथन करी तत्त्व प्रकट करवा माटे तेना सात प्रकारे अर्थ प्रकट कर्या छे - १. शास्त्रार्थ, २.स्कन्धार्थ, ३.प्रकारणार्थ, ४. अद्यायार्थ, ५. श्लोकार्थ, ६. शब्दार्थ, अने ७.अक्षरार्थ. आमाना प्रथम चार अर्थ आपश्री ए 'तत्त्वार्थ दीप निबन्ध' ग्रन्थ ना 'भागवतार्थ प्रकरण मा समजाव्या छे, अने बाकीना त्रण अर्थ - श्लोकार्थ, शब्दार्थ अने अक्षरार्थ नो खुलासो आपे 'सुबोधिनिजी' मा कर्यो छे.

आम सात प्रकार ना अर्थ करवा छतां ते सर्वे जुदा जुदा अर्थ नथी परंतु ते बधा नी एकवाक्यता आपे प्रतिपादित करी छे. निबंन्ध ग्रन्थ आपनी दार्शनिक विचारधारा प्रतिपादित करवा रचेलो आपश्रीनो महत्वपूर्ण ग्रन्थ छे. श्रीसुबोधिनिजी ना लेखन कार्य नो प्रारम्भ आपे संवंत १५६५ ना अरसा मा आपना शिष्य माधव भट्ट काश्मीरी द्वारा श्रीवृंदावन मां कर्यो हतो.

वल्लभाख्यान मा उल्लेख मले छे - "त्यांथी केशवघाट पाउंधारिया कही कथा तत्त्व समाधि". आमां 'तत्त्व' शब्द थी 'तत्त्वार्थ दीप निबंन्ध' ग्रन्थ नो अने 'समाधि' शब्द थी श्री भागवत जी ना अर्थ नो उल्लेख करवामां आव्यो छे. माधव भट्ट काश्मीरी ए आपश्रीनी पासे रही जीवन पर्यंत सुबोधिनिजी नुं लेखन कार्य कर्यु हतुं.

श्रीसुबोधिनीजी आपनो फलरुप ग्रन्थ कहेवाय छे, कारण के तेमां आपे भागवत जीना दशम स्कन्ध नी फलरुप श्रीकृष्ण नी अद्भुत अलौकिक लीलाओ नु विस्तार पूर्वक वर्णन कर्यु छे. आपश्री ना अमृत वचनो श्रवण करनार भक्तो नी सर्व इन्द्रियो ने माटे सुखजनक अने सर्वताप निवर्तक छे. सुबोधिनिजी ना अवगाहन थी पुष्टिजीवोने 'निरोध' सिद्ध थई शके छे.

आपश्री नुं आ नाम आपना "वीर्य धर्म " नुं सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (५८)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (४२)

****

श्रीगुसाइंजीए सर्वोत्तमजी मां श्रीमहाप्रभुजीनुं बेतालीसमु नाम कह्यु छे - "तत्सारभूत रास स्त्रिभाव पूरित विग्रहः". 'तत् सारभूत' एटले श्रीभागवत रूपी समुद्रनुं मंथन करी तेना सारभूत रास-स्त्रीभाव ने प्रकट कारावना वाला श्रीमहाप्रभुजी छे. श्री भागवत नुं विचारात्मक मंथन करी सारभूत स्त्री गोपीजननो श्रीकृष्ण प्रति अनुपम प्रेम एवं अनन्य भाव छे, तेज ते अमृतनो सार छे. ते गोपीभाव ना बाह्य अने भीतर थी परिपूर्ण श्रीमदाचार्यचरण नु विग्रह एटले स्वरूप छे.

जेवीरीते क्षीर सागर ना मंथन थी निकळेला अमृत ना भोक्ता केवल देव ज हता, तेवीरीते रास-स्त्रिभाव ना भोक्ता केवल श्रीमहाप्रभुजी ज छे. तेथी आपश्री नुं श्रीअंग बाह्य तेमज आंतर रूपथी ते भाव थी पूर्ण छे. श्रीभागवत रूपी समुद्रना मंथन थी प्राप्त भाव नी विशेषता ए छे के, क्षीर समुद्र तो सामान्य जल रुप छे, तेथी तेमांथी अमृत उपरान्त अन्य पदार्थो नी उत्पत्ति थई हती. परंतु अहीं तो श्रीभागवत रुपी समुद्र स्वयं ज अमृत तुल्य छे. तेथी तेना मंथन थी प्राप्त थनारो विशिष्ठ अमृत आनंद अर्थात जे रास -

स्त्रिभाव - स्वामिनी भाव रूप सिवाय तेमाथी अन्य कोई पदार्थ नी प्राप्ति नी संभावनाज नथी.

तदर्थ ज एकवार श्रीमहाप्रभुजी श्रीनवनितप्रियाजीने पोतानी साथे लईने एक शैया पर पोढ्या हता, ते रास स्त्रिभाव नु सूचक छे. तेनो उल्लेख कीर्तन मां मले छे. - "सुखज सेज पौढे श्रीवल्लभ संग लीये नवनीतप्रिया". श्रीसुबोधिनिजी मा पण रास - स्त्रिभाव सूचक वाक्य मले छे - "कृष्णअवतार पतिः", "दासीनां सर्वरक्षार्थ आविर्भूतो मम स्वामी", इत्यादि.

श्रीवल्लभ ना रूपमा भगवान श्रीकृष्णेज सेवा, सामग्री, आभूषण इत्यादि मां गोपिभावनी मुख्यता नो उपदेश आप्यो छे, तेमणे गोपीजनोने गुरु बताव्या छे. आ प्रकारे श्रीगुसांजीए श्रीमहाप्रभुजी नुं भावमय स्वरूप आ नाम द्वारा बताव्यू छे. आ नाम आपश्री ना "वीर्य धर्म" नु सूचक छे. (डॉ.जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (५९)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (४३)

****

श्रीमहाप्रभुजीनु तेतालीस मु नाम श्रीगुसाइंजीए "सानिध्यमात्रदत्त श्रीकृष्णप्रेमा" बताव्यू छे. आपश्रीना विशिष्ट स्वरूपनो परिचय आ नाम द्वारा श्रीगुसाइंजी करावे छे. आपश्री नु बाह्य-आभ्यान्तर स्वरूप एक रसभाव थी परिपूर्ण छे. अर्थात आप बाहर थी तेमज भीतर थी श्रीकृष्ण रस थी पूर्ण होवाना कारणे जे जीव आपनी समीप आवे छे, तेने आप 'श्रीकृष्ण-प्रेम' नु रस दान करे छे. जेम कहेवामां आवे छे - "श्वाति बून्द जब परत है जाहिमे, ताहिमे होत तेसोजु बानो". अर्थात जीवन मां जेने जे व्यक्ति नो संग होय, ते व्यक्ति नो प्रभाव तेना ऊपर पड़े छे, अने तेवो भाव उत्पन्न थाय छे.

जेनी पासे जे पदार्थ पूर्ण रूपेण उपलब्ध होय तेंनु दान करवा ते समर्थ होय छे. अही 'श्रीकृष्ण' शब्द वापर्यो छे.एटले श्रीमहाप्रभुजी समस्त गोपीजनो सहित रासलीला विशिष्ट फलात्मक श्रीकृष्ण मां प्रेम नु दान करवा समर्थ छे, तेम श्रीगुसाइंजी प्रतिपादन करे छे.

तदर्थ, आपश्री ना बेठकजी मां भाव पूर्वक आपनी सन्मुख थतां, श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र ना पाठ द्वारा आपनां वांग्मय स्वरूप नु सानिध्य प्राप्त थतां, एम् कोईपण प्रकारे आपश्रीनी निकटता जो प्राप्त थाय तो अवश्य आपना द्वारा 'श्रीकृष्ण प्रेम' नु अलौकिक दान मेळवी शकाय छे.

वार्ता-साहित्य मा प्रसंग प्राप्त थाय छे के ज्यारे श्रीमहाप्रभुजी बद्रिकाश्रम पधार्या त्यारे त्यां अनेक जन्मोथी तप करी रहेला बे तपस्विओने आपश्रीना दर्शन थया, जेना प्रभाव थी तेओ नो जन्म व्रज मां आन्योर गाम मां थयो. तेमनी पांच वर्षनी वय थतां तेमने श्रीआचार्यजी ना दर्शन थया, जेथी तेमने श्रीकृष्ण मा अनन्य प्रेम उत्पन्न थयो. आपश्री ए बन्ने बालको ने शरणे लइ तत्काल लीला-प्राप्ति करावी, ज्यां तेओ भ्रमर रूपने प्राप्त थया.

श्रीमहाप्रभुजी नु आवु अद्भुत सामर्थ्य आ नाम मां चरितार्थ थाय छे, जे आपना "श्री-धर्म" ने सूचित करे छे. (डॉ.जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (६०)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (४४)

****

श्रीगुसाइंजी श्रीमहाप्रभुजीनु चुम्मालीसमु नाम श्रीसर्वोत्तमजी मा बतावे छे - "विमुक्तिदः". श्रीमदाचार्यचरण पुष्टिजीवोने एक विशिष्ट प्रकार्नी मुक्ति आपे छे. पुष्टिमार्ग मां श्रीकृष्णनी आनंदमयी लीला मां प्रवेश पामवो, ते 'मुक्ति' छे. श्री महाप्रभुजी पोतांना सेवकोने श्रीकृष्णनी सेवा अने कथा द्वारा श्रीकृष्णनी लीला नो अलौकिक आनंद प्राप्त करावे छे, ते ज पुष्टिमार्गीय मोक्ष अर्थात मुक्ति नो प्रकार छे. तेथी श्री गुसाईजी आपने 'विशिष्ट मुक्तिदाता' कहे छे.

जेवीरीते मर्यादामार्ग मा सायुज्य, सामीप्य आदि मुक्तिना प्रकार बताव्या छे, टेमः पुष्टिमार्गमां श्रीकृष्ण साथे ना साक्षात सम्बन्ध ने ज परम फल बतावावामां आव्यू छे. जेम मुक्त जीवोनी तेना पछी अन्य कोई अवस्था होती नथी, तेम जेमने पुष्टिमार्गीय परम फल श्री कृष्ण नी प्राप्ति थया पछी कोई बीजी अवस्था होती नथी. ए पुष्टिमार्गनो महान उत्कर्ष छे.

आ वात नुं प्रमाण शिक्षाश्लोक मा वर्णवता कहे छे -"मुक्ति हितवान्यथारुपं स्वरूपेण व्यवस्थिति", अने पुरुषोत्तम सहस्त्रनाम मां कहे छे -"शास्त्रानपेक् कामैक मुक्तिद्वार विवर्धनः".

वार्ता साहित्य मा जियादास सूरी क्षत्रिय वैष्णव ना जीवन चरित्र मा श्रीमहाप्रभुजी नु आ नाम चरितार्थ थतु जोई शकाय छे. तेमने आपश्री ए शरणे लइ श्रीलाडीलेशजी नी भगवत्सेवा पधारावी आपी हती. जियादासे तनुवित्तजा अने मानसी मा निमग्न थई फ़क्त चार प्रहर ज सेवा करी अने अनोसर पछी भगवद विरह थता तेओने देह त्याग करी नित्यलीला मा प्रवेश प्राप्ति थई गयी.

ए प्रकारे श्रीमहाप्रभुजी पोताना सेवकोने श्रीकृष्णप्रेम नुं दान करी 'विमुक्ति' एटले दैहिक, प्रापंचिक-देहथी जीवने मुक्त करी अलौकिक नूतन आत्मीयदेह प्रदान करी नित्यलीला नी प्राप्ति करावे छे.

श्रीमहाप्रभुजी नुं आ नाम आपनां "ज्ञान धर्म" नुं सूचक छे' (डॉ.जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (६१)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (४५)

****

श्रीगुसाइंजी श्रीमहाप्रभुजीनु पिस्तालीसमु नाम श्रीसर्वोत्तमजी मा बतावे छे - "रासलीलैकतात्पर्यः". आ नामनो समास विग्रह करीए तो अर्थ निकले -'श्रीगोपीजनो साथे श्रीकृष्ण नी जे मधुर एवं फलात्मक रासलीला छे, केवल ते ज जेमनु तात्पर्य छे, एवा श्रीवल्लभाचार्यजी'. श्रीमहाप्रभुजी ना सिद्धान्त अनुसार श्रुति, शास्रो आदि मां जे कांई उत्तम फलो नो निर्देश करवा मां आव्यो छे, ते सर्व फलोमां उत्तमोत्तम सर्वोत्तम फल भगवान

श्रीकृष्ण नी रासलीला छे. तदर्थ ज श्री भागवत मां दशम स्कन्ध ना रासपंचाध्यायी नु वर्णन जेमां छे, ते अध्यायोने 'फल प्रकरण' कहेवाय छे. मन सहित एकादश इन्द्रियो द्वारा भगवान ना स्वरूपानंद नो उपभोग थाय एज ईन्द्रियधारिओ नु सर्वोत्कृष्ट फल छे. आवु फल रासलीला द्वाराज प्राप्त थई श्के छे, जेनु वर्णन आपश्री ए वेनुगीत ना सुबोधिनिजी मा "अक्षणवतां फलमिदं न परं विदामः" श्लोक मां कर्यु छे. त्यां कारिका मा आपश्री कहे छे - "इदमेवेन्द्रियवतां फलं मोक्षोपि नान्यथा" अर्थात रासलीलाज देहधारियो ने माटे परम फल होवाथी पुष्टिमोक्ष रूप छे. तेथी आप पोताजा सेवकोने मुक्तिना चारेय भेदों नो अनुभव करावी रासलीला फल नुं दान करे छे. निबंन्ध मां आपश्री कहे छे के "संघातस्य विलिनत्वादात्मनैव सुखप्रभा", अर्थात मुक्तिमां तो देह, इंद्रिय आदि नो संघात थई जाय छे, केवल आत्मा थीज ब्रह्मसुखनु ज्ञान थाय छे, ज्यारे गोपीजनोए रासलीलामां सर्वेन्द्रियो थी अलौकिक सुखानुभव कर्यो हतो, जे सवोत्तम फलरुप छे. तदर्थ आपनु चिंतन सदैव ते परम फल रूप रासलीला मा ज रहेलु होय छे. आपश्री ए चंद्रसरोवर पोतांना सेवकोने आ देह वड़े ज रासलीला ना दर्शन करावी पुष्टिमुक्ति ना सुखनो अनुभव काराव्यो हतो. आपनु आ नाम ""वैराग्य धर्म" नु सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

श्रीविठल वाणी" (६२)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (४६)

****

श्रीमहाप्रभुजीनुं छेतालीसमु नाम श्रीगुसांईजीए "कृपयैतत्कथाप्रदः" आप्यु छे. आपश्री भगवल्लीला - कथा नुं दान तो करेज छे, परंतु तेओ पोताना सेवकोने विशेष रुपे करे छे. पोतानी विशेष कृपा द्वारा श्रीमहाप्रभुजी रसरूप - रसना समूह जेवी श्रीकृष्ण नी रासलीला संबंधी कथानुं हर्ष रूप प्रकर्ष साथे उत्तम प्रकारनुं दान करे छे.

जे सेवको नी समक्ष आप कथा करे छे, ते शाब्दिक कथन मात्र होय है. परंतु ज्यां आप कृपा पूर्वक कथा कहे छे, ते दान ना अर्थ मां छे, कारणके कृपा पूर्वक कहेवायेली कथा भक्त ना हृदय सुधी पहोंचे छे. आ नाममां "प्रद" शब्द प्रयोग करवानुं तात्पर्य दान करवा ना अर्थ मां छे. कृपा नुं दान करवु ए आपनी विशेष कृपा छे, तेम सूचवे छे.

श्रीमहाप्रभुजी सेवक नी यौग्यता - अयोग्यता नौं विचार कर्या विना केवल कृपायुक्त थइने रासलीला नी गूढ कथानुं दान करे छे, तेम कहेवानुं अहीं प्रयोजन छे. आप मात्र कथा ज कहेता नथी, परंतु तेना अर्थनो - लीलानो अनुभव पण करावे छे, अर्थात कथा सम्बंधित वृजभक्तो सहित श्रीकृष्ण ना दर्शन पण करावे छे.

दामोदरदास हरसानीजी नी वार्ता मां प्रसंग छे के श्री महाप्रभुजी कहे छे - "दमला घणो समय थई गयो - श्री ठाकोरजी नी वार्ता करी नथी", आ वाक्यो नो मर्म आप पोताना सेवको ने रासलीला संबंधी वार्ता कहेवानो संकेत प्राप्त थाय छे.

श्रीगुसाइंजी ना सेवक अलीखान पठान नी वार्ता प्रसंगमां - ज्यारे श्रीगुसाइंजी श्रोताओने आगला दिवस नी कथा नी वात पुछे छे त्यांरे अलीखान पठान विनंती करे छे के "कृपानाथ कालनी कथानी वात

कहूँ के शरूआतथी ?". आ सांभली बधा श्रोता आश्चर्य पाम्या. आ प्रसंगमां 'कृपा सहित कथा नुं माहात्म्य' बताव्यू छे.

श्री महाप्रभजी एवी कृपायुक्त कथानु दान करवा वाळा छे, तेम समजाववानुं आ नाम नुं तात्पर्य छे. आ नाम आपश्रीना "धर्मी स्वरूप" नो सुचितार्थ छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (६३)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (४७)

****

श्रीगुसांईजीए श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां श्रीमहाप्रभुजीनुं सुडतालिशमु नाम "विरहानुभवैकार्थसर्वत्यागोपदेशक" बताव्यू छे. आ नाम द्वारा श्रीगुसाइंजी श्रीमहाप्रभुजी ना श्रीकृष्ण ना विरहना अनुभव माटे सर्वस्वना त्याग ना उपदेश ने सूचित करे छे, केमके सर्वत्याग विना श्रीकृष्ण ना विरह नो पूर्णतया अनुभव थई शकतो नथी.

रस नुं स्वरूप द्विदलात्मक छे - संयोगात्मक अने विप्रयोगात्मक. श्रीमहाप्रभुजी निजजनोने 'संयोग रस' नुं दान श्रीकृष्ण नी रासलीला नी कथा द्वारा करे छे, अने विप्रयोग रस नुं दान सर्वस्व ना त्याग ना उपदेश द्वारा करे छे. ए रीते आप उभयात्मक रस नुं पूर्णदान करे छे. आम निजजनोने भगवद रस ना अनुभव करावववानुं प्रयोजन छे. तदर्थज आपे "गृहं सर्वात्मना त्याज्यमं..... कृष्णो ऽ नर्थस्य मोचकः" नी आज्ञा करी छे.

आवो उच्चत्तर उपदेश आप केवल वाणी द्वाराज नहीं, परंतु पोताना चरित्रो द्वारा बाह्याभ्यान्तर विप्रयोग अवस्थानो अनुभव करावे छे. ए सर्व विदित छे के आपश्री मात्र धोती-उपरणो धारण करतां हतां, समग्र पृथ्वी परिक्रमा आपे खुल्ला चरणारविन्द थी करी हती, गृहस्थाश्रम स्वीकारवा छतां आपनुं जीवन निज स्थान मां पण त्याग पूर्वकनुं हतुं, पोते कोई वैभव नो अंगीकार कर्यो न हतो, वगेरे हकीकत आपनुं त्यागात्मक चरित्र सूचवे छे, जेनाथी आपना बाह्य विप्रयोग ना दर्शन थाय छे. तेवीज रीते आपे आन्तर्विरह ना दर्शन परमानंददासजी जेवा स्वकीय अंतरंग सेवकोने कराव्या छे. तेथीज ज्यारे आपश्रीए परमानंददासजीने भगवद यश नुं गान करवा कह्यु त्यांरे तेमणे गाएलु - "हरि ! तेरी लीला की सुधि आवै". आ पद श्रवण करतां ज श्रीमहाप्रभुजी ने मूर्छा आवी गयेली, अने आप लीलारस मां निमग्न थई गयेला. आम आपश्रीना अन्तर्विरह नुं स्वरूप समजी शकाय छे.

आ रीते श्रीमहाप्रभुजीए पोताना स्वरूप द्वाराज निजजनोने संयोग-विप्रयोग बन्ने रस नो अनुभव करावी तेनो उपदेश आप्यो छे.

आ नाम आपना "ऐश्वर्य धर्म" ने सूचित करे छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

श्रीविठल वाणी" (६४)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (४८)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां श्रीमहाप्रभुजीनुं अड़तालीशमुं नाम श्रीगुसांइजीए "भक्त्याचारोपदेष्टा (च)" बताव्यु छे. अर्थात श्रीमहाप्रभुजी भक्ति ना आचरण नो उपदेश करवा वाळा छे. पुष्टिभक्तिमार्गीय आचरण मा संयोग तथा विप्रयोग नी अवस्था नु ज्ञान तेनी स्थिरता माटे आवश्यक छे. तेज रीते 'अन्याश्रय' तथा 'अविस्वास रहित, बिना स्वार्थ निष्कपट भाव थी श्रीकृष्ण ने परम फल रूप मानी, तेमनी प्रेमपूर्वक सेवा करवी ते मुख्य आचार छे. श्रीमहाप्रभुजी पोतांना सेवकोने तद्‌विषयक उपदेश आपवा वाळा छे.

आ नाम नी साथे श्रीगुसाइंजीए "च" अक्षर मुक्यो छे. तेंनु तात्पर्य ए छे के, आप केवल उपदेश नथी आपता परंतु भक्तिमार्गीय आचार शिखववा तेओ स्वयं पण तेनुं पालन करे छे. ते बताववा तेमणे "च कार" जोड्यो छे. श्रीमहाप्रभुजी पोते पण अनन्यता पूर्वक श्रीकृष्ण ने सेवे छे. श्रीकृष्ण नी सेवामां मर्यादामार्ग नी पूजा विधि थी भिन्न स्नेह ज नियामक छे, जे उभयान्वय छे, अर्थात भक्त नो स्नेह भगवान प्रति जेम वधे छे, तेम भगवान नो प्रेम पण वधे छे. भगवत्प्रेम ज उत्तरोत्तर आसक्ति अने व्यसन मा परिणमित थाय छे.

सेवा तेज फलरुप मानवा मां आवे ज्यारे तेमां प्रेम-आसक्ति-व्यसन नी क्रमशः दशा प्राप्त थाय. तेथी श्रीआचार्यचरण स्वयं भाव संपन्न सेवा करी पोतांना इवको ने समजावे छे. एवी भावपूर्ण सेवा मांज संयोग अने विप्रयोग रसानुभव वाळी सर्वोत्तम पुष्टिभक्ति नो अनुभव थाय छे. आपश्री अडेल मां बिराजता हतां त्यांरे एवी रसात्मक सेवा करी भक्तोने भगवत्सेवा नो प्रकार बताव्यो हतो. पुष्टिमार्ग मां अन्याश्रय महाबाधक छे. श्रीहरिरायजी शिक्षापत्र मा आज्ञा करे छे - अन्याश्रयो महानेव बाधको भियताम ततः", जे वात स्वयं श्रीमहाप्रभुजीए विवेकधैर्याश्रय ग्रन्थ मा स्पष्ठ करी छे. श्रीकृष्ण मा अनन्यता ए पुष्टिभक्ति नुं महत्व नुं अंग छे, जेना विषय मा श्रीमहाप्रभुजीए पोतांना सेवको ने चातक - ब्रह्मास्त्र ना उदाहरण थी खुलासा पूर्वक उपदेश आप्यो छे, जे आ नाम ने सार्थक करे छे.

आ नाम आपना "वीर्य धर्म" ने सूचित करे छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (६५)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (४९)

****

श्रीमहाप्रभुजीनु ओगणचालीसमु नाम श्रीगुसाइंजीए "कर्ममार्ग प्रवर्तक" आप्यु छे. श्रीमदाचार्यचरण वास्तवमां 'भक्तिमार्ग' ना प्रतिपादक - प्रवर्तक छे. तेम छतां भक्तिमार्गनी दृढता माटे तेमज तेना सहायक बने तेवा कर्मोनो पण तेओ अनुरोध करे छे. निबंधना शास्त्रार्थ प्रकरणमां आपे भगवान श्रीजगन्नाथजी नी आग्या " एकं शास्त्रं देवकी पुत्र गीतं ....कर्मोप्येकं तस्य देवस्य सेवा" नो स्वीकार करी पुष्टिमार्गमां मुख्य

कर्म "कृष्णसेवा" नो उपदेश कर्यो छे. तदनुसार सेवानु स्वरुप समझावतां कहे छे - "चेतस्तत् प्रवणं सेवा" (सि.मु.). तेथी चित्तनी प्रवृत्ति माटे वर्णाश्रम, शौचादि देहधर्मनुं कर्म भगवत सेवामां अंगरुपे सहायक होवाथी आवश्यक छे.

श्रीमहाप्रभुजीए 'पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेद' ग्रथमां आग्या करी छे - "लौकिकत्व वैदिकत्वं कापट्यात्तेषु नान्यथा". कृष्णभावनी रक्षा माटे लौकिक - वैदिक कर्तव्यो ने कपट वत् - अर्थात् आसक्ति विना निभाववानो आपे उपदेश आप्यो छे. श्री हरिरायजी पण शिक्षापत्रमां कहे छे -"लौकिकं वैदिकं चापि कार्यं कुर्वन्ननास्थायां". लौकिक - वैदिक कार्यो तेमां आस्था राख्या विना करवा.

आपश्री समजावे छे के चित्तनी प्रहन्नता विना भगवत्सेवा रुप भक्तिना आचरणमां मन लागतुं नथी. वर्ण अने आश्रमना धर्मो तेमज कर्मो चित्तनी शुद्धि माटे आवश्यक छे। तदर्थ आप स्वयं तेनु पालन करी तेनी महत्ता समजावे छे. आपश्रीए जगदीशमां एकादशीनुं व्रत कर्यु हतुं. परिक्षार्थे आपश्रीने एकादशीने दिवसे श्रीजगदीश नो प्रसाद आपवामां आव्यो हतो त्यारे आपे महाप्रसादना माहात्म्यनु वर्णन रात्रि पर्यंत करी पोते व्रतनुं पालन कर्यु हतुं.

वार्ता प्रसंगमां पण सुविदित छे के आपे मणुंदना राजादुबे अने माधो दुबेए आपश्रीनी कथा द्वारकामां सांभलीने शरणे लेवा विनंति करी त्यारे तेमने आशौच होवाथी शरणे नहिं लीधा. सुतक उतर्या पछी ज्यारे ते बे भाईओ शुद्ध थया त्यारपछी ज तेमने दीक्षा आपी. तेटला दिवस आपे द्वारकामां मुकाम कर्यो. हतो. पोते कर्ममार्गना पण प्रवर्तक होवानुं आ स्पष्ट उदाहरण छे.

आ प्रसंग आपश्री कर्ममार्गना पण रक्षक होवानुं सूचवे छे.

आनाम आपना "यश धर्म" नो सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविट्ठल वाणी" (६६)

****

"श्रीसर्वोतम स्तोत्र"_नाम (५०)

****

श्रीमहाप्रभुजीनुं पचासमुं नाम श्रीगुसांईजीए " यागादौ भक्तिमार्गैक साधनत्वोपदेशक:" आप्युं छे. आ नामनुं तात्पर्य छे के श्रीमहाप्रभुजी पुष्टिभक्ति प्राप्त थवाना मार्गमां सहायभूत बने तेवा यज्ञ - यागादि साधनोना उपदेश करवावाळा छे.

शास्त्रोमां विधान छे के भक्तिनो उत्कर्ष यज्ञ याग आदि कर्मो थी सिद्ध थाय छे. वास्तवमां याग वगेरे कर्मो नो उपयोग स्वर्गादि अनित्य फल नी प्राप्ति हेतु होतो नथी, परंतु ते भक्ति नी प्राप्ति मा सहायक बने ते माटे करवा जोईए, तेम उपदेश श्रीमदाचार्यचरण आपे छे.

पुष्टिमार्गीय वैष्णव जे श्रौत अथवा स्मार्त कर्म करे छे तेनुं प्रयोजन केवळ श्रीकृष्ण भक्ति ज होय छे. ते कर्मो बे प्रकारना होय छे - 'सकाम कर्म' अने 'निष्काम कर्म'. भागवत कहे छे -"निष्कामा वैष्णवा यत:", वैष्णव निष्काम होय छे. निष्काम थी तात्पर्य छे - 'लौकिक कामना रहित, केवळ कृष्णकामनामय'. अर्थात् श्रौत-स्मार्त कर्मो भक्तिना सहायक साधनो तरीके करवाना छे, तेम श्रीमहाप्रभुजीए समजाव्यु छे.

तदर्थ आपश्रीए पण सोमयज्ञ सम्पन्न करी बताव्यु छे के भक्तिमार्गमां आवा कर्मो अनावश्यक नथी. आ यज्ञ द्वारा श्रीमहाप्रभुजीए भक्तिमार्ग ना अपराध नुं निवारण कर्युं छे..

भक्तिमार्ग मां बे अपराध छे , एक - अनेक देवतओना पूजन नूं विधान होवाथी कृष्ण सिवाय अन्य देवताओनो संबंध थाय छे, अने बीजो - कृष्णसेवा फल नो अभाव. यज्ञमां अन्य देवताओनु पूजन श्रीकृष्ण नी विभूति रुप मानी ने करवामां अावे छे, नहीं के श्रीकृष्ण ना समान स्वतंत्र देवता मानी ने! आ हकीकत महाभारतमां युधिष्ठिर द्वारा करवामां आवेल अश्वमेध यज्ञ ना प्रसंग मां स्पष्ट करवामां आवेली छे. आम भक्तिमार्ग मां यज्ञ आदिनी उपयोगीता नो उपदेश करनारा आचार्यचरण छे तेवो निर्देश आ नाम मां करवांमा आव्यो छे.

आ नाम आपश्री ना "श्री धर्म" नुं सूचक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीविठल वाणी" (६७)

****

"श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र"_नाम (५१)

****

श्रीसर्वोत्तमजीमां श्रीमहाप्रभुजीनु एकावनमु नाम श्रीगुसाइंजीए "पूर्णानदः" आप्यु छे. श्रीगुसाइंजी समजावे छे के श्री महाप्रभु जी पूर्ण आनंद स्वरूप छे अर्थात् आंतर आनंद थी परिपूर्ण छे. श्रुति मा करवा मा आवेली आनंद नी गणना अनुसार प्राणी मात्र मा तेमज अक्षरब्रहम जे पुरुषोत्तम नू धाम छे, तेनो आनंद पण गणित आनंद छे. आ वात परम तत्त्व श्री कृष्ण माटे कहीं छे. परन्तु श्री महाप्रभु जी तथा श्री कृष्ण मा अभेद छे. "वस्तुत: कृष्ण एवं" एम श्री गुसाइंजी तेमेने माटे कहे छे. तेथी श्री महाप्रभु जी पण "पूर्णानंद" छे.

तेना कारणे श्री महाप्रभु जी मा स्वर्ग आदि तुच्छ कामना ओ नी संभावना नथी. तदर्थ श्री महाप्रभु जी यज्ञ यागादी जे पण कर्म करे छे ते भक्तिमार्ग ना साधन ना रूप मा तथा भक्तियोग ना प्रतिबंधों ना निवारण माट करे छे.

श्री महाप्रभु जीने स्वधाम पधारवा माटे ज्यरे मधुवन मा बीजी बखत आज्ञा थई त्यारे तेमने स्वीकार ना कर्यो कारण के पहेली आज्ञा गंगासागर पर आपने "सत" स्वरूप थी अंने बीजी आज्ञा "चित" स्वरूप थी थयेली होवाथि आने आपनू स्वरूप पूर्ण आनंद मय होवथी, जो आपने भगवान ना चित स्वरूप मा पधारवा नी कामना न थी तो स्वर्ग आदि तुच्छ फल नी काम ना नज संभवे . आम श्री महाप्रभु जी नू पूर्णानंद होवू ते तेमना "ज्ञान" धर्म नूं सूचक छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)